ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

फरवरी, 2022

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

फरवरी 2022

वर्ष : 2, अंक : 14

इस अंक की रचनाएं

कवर स्टोरी

देवेंद्र मेवाड़ी : फूल खिले इतिहास में 14

इस अंक में खास

श्रद्धांजलि :
अनिल : लता मंगेशकर : ज्ञाना स्वर की देवी का 10
अंजीव अंजुम : गायकी का ताज खो गया 11
बच्चों के प्रिय लेखक :
प्रकृति की गोद से बच्चों की दुनिया में देवेंद्र मेवाड़ी 17
विज्ञान :
पंकज चतुर्वेदी : एनरिको फेर्मि 22
धारावाहिक उपन्यास :
डॉ. विमला भंडारी : एक थी नन्ही मक्खी 30
सैर- सपाटा :
ऐल्लापेल्ली : भारत में देखो वेनिस 38
प्रकृति के सितारे :
गधे की इज्जत कीजिए 42
खेल-खिलाड़ी :
अंडर नाइनटीन क्रिकेट : भारत बना विश्व चैंपियन 46
पुस्तक परिचय : 54
कार्टून : पहले क्या करें 55

बाल मंच

चित्र : सक्षम श्रीवास्तव, शानवी श्रीवास्तव, शौमिका श्रीवास्तव, योगित भाटिया 48-49
कविताएं : बबीता जोशी : समझने की चाह, हर्षिता भट्ट : किशोरावस्था, आंचल जोशी : एक चाह, साक्षी भंडारी : क्यों डरी हुई है वो, लक्ष्य जायसवाल : पर्यावरण को न सताएं, सुधांशी पटेल : अपना तिरंगा, मन्नत भाटिया : मेरे दादू 50-53
विचार : अमनदीप सिंह : गुब्बारा : खेलना या कमाना 52

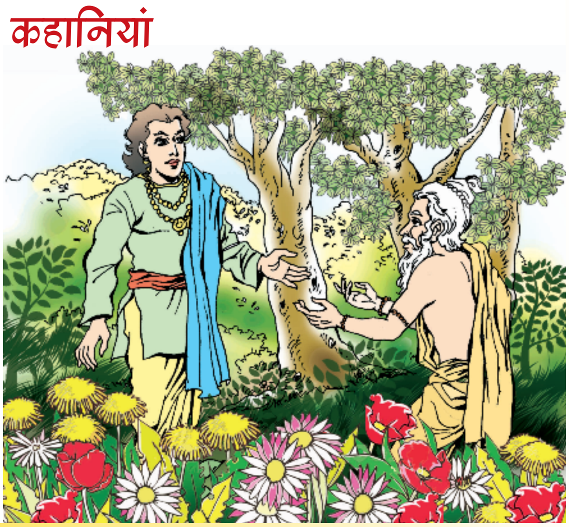

अनिल जायसवाल : फूल उपवन के 6
गिरिजा कुलश्रेष्ठ : वह फिर लौट आया 12
संजीव ठाकुर : सजा मिलेगी तो जरूर 20
डॉ. शील कौशिक : आगे वाली बतख 26
डॉ. अनुपमा गुप्ता : नया पेड़ 29
डॉ. राकेश चक्र : सोनी मम्मा और मुनमुन 32
सोमदत्त शर्मा : टॉमी और बंदर 36
रोशनी राव : अपना-पराया 41
शैलेन्द्र सरस्वती : भाग्य और लक्ष्मी 44

सन्तोष कुमार सिंह : खुद को गर्वित पाते फूल 5
अरुण गिजरे : राम-राम गाती चिड़िया 9
सतीश उपाध्याय : सूनी मंडी राम दुहाई 24
अंजीव अंजुम : सर्दी दूर भगाने को 25
डॉ. फहीम अहमद : एक मिनट 28
टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला' : वसंत आ गया 33
डॉ. प्रीति प्रवीण खरे : बच्चों की टोली 34
उदय मेघवाल 'उदय' : मुँह में पानी आया 35

अंकों की होड़ से बचना...

वासंती फरवरी का पहला सप्ताह बीत गया। कोरोना की तीसरी लहर से जितनी घबराहट थी, वैसा कुछ नहीं हुआ। धन्यवाद मानव शरीर के रोग प्रतिरोधक क्षमता और वैक्सीन को। अब तो किशोरों के बाद बच्चों तक भी इसके पहुंचने की उम्मीद है।

स्कूल और कॉलेज के साथ बाकी शिक्षण संस्थान भी खुल रहे हैं। कई बच्चे तो पूरे दो साल बाद स्कूल पहुंचकर खुशी से रो पड़े। यह भावुक क्षण एक बच्चे का उसके स्कूल से लगाव दिखाता है।

स्कूल खुलते ही अंकों की होड़ वाली प्रतियोगिता शुरू होने वाली है। परीक्षा के लिए डेट शीट्स आ रही हैं। पर इस फ्रंट पर तुम सब बच्चों से मेरी विनती होगी कि यदि अंक कम भी आएं, तो निराश न होना। दो साल तक स्कूल से दूर रहकर एकाएक फिर से उतने ही नंबरों से शुरुआत करना आसान नहीं। पर धीरे-धीरे तुम सब अपने सर्वश्रेष्ठ तक पहुंचकर ही रहोगे, यह मेरा प्रबल विश्वास है।

वसंत का महीना और पेड़-पौधों का गहरा संबंध है। पेड़ अपने पत्ते बदलते हैं, फूल खिलते हैं और यही जीवन का सार है। हमें हमेशा सकारात्मक रहने की जरूरत है।

इस बार के अंक में फूलों पर तुम सबके लिए कुछ खास सामग्री है। प्रसिद्ध विज्ञान लेखक देवेंद्र मेवाड़ी जी तुम्हारा देशी और विदेशी फूलों के इतिहास से परिचय कराएंगे।

इस बार से पायस में हम विज्ञान पर स्तंभ के साथ तुम्हारे लिए बाल लेखकों से परिचय कराने की शुरुआत कर रहे हैं। इसमें तुम जान पाओगे कि तुम्हारे लिए अपनी लेखनी से स्वप्निल संसार उपस्थित करने वाले रचनाकार किस तरह का जीवन जीकर लेखक बने हैं। इसकी शुरुआत भी बच्चों के प्रिय लेखक देवेंद्र मेवाड़ी से हो रही है। उनके जीवन से बहुत प्रेरणा ले सकते हो।

फरवरी हमेशा से एक खुशनुमा महीना रहा है। पर इस बार इस महीने ने भारत की आवाज, भारतरत्न और स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर को हमसे हमेशा के लिए छीन लिया है। लता और उनकी आवाज से तुम शायद ज्यादा परिचित न होगे। पर अपने पापा और दादा-दादी से पूछना। मुझे तो लगता है, बचपन में मां की आवाज के बाद जिस आवाज को मैंने पहचाना था, वो लता जी की थी। उनके भजन, गीत-गजल आदि में उनका स्पष्ट और शुद्ध उच्चारण गायकों और गायकी के लिए मानक हैं। हम सब की प्यारी लता दीदी हम सब के दिलों में रहेंगी। उन्हें पायस परिवार की तरफ से हार्दिक श्रद्धांजलि।

हां, अंत में फिर से अपील करना चाहूंगा बच्चों के लिए अच्छी पत्रिका चाहने वालों से कि वे आगे आकर पायस की मदद करें। पत्रिका को रचनाओं के साथ फंडिंग की भी जरूरत होती है और इसके लिए मुझे आप सबकी बहुत जरूरत है।

अनिल जायसवाल

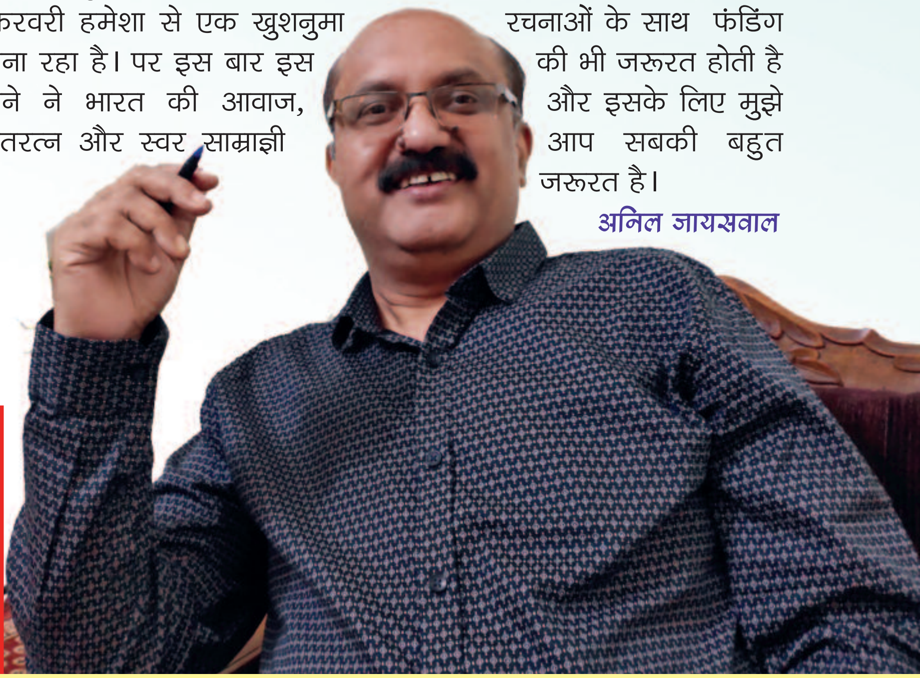

एक अपील

यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो कृपया पढ़ने के बाद इसका 20 रुपए शुल्क मानकर सहयोग करें। धन्यवाद

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका **पायस**

संपादक : अनिल जायसवाल
कविता सलाहकार : संतोष कुमार सिंह

Email : payasmagazine@gmail.com
Facebook : https://www.facebook.com/payasbaalpatrika
Whatsapp : 7982014609
Youtube : payas magazine
https://youtube.com/channel/UCvXDRK5Xz_dwnFfGwtfGLJg
Blog : https://payasbaalpatrika.blogspot.com/

- लेखक व बच्चे रचनाएं भेजने के लिए ईमेल का प्रयोग करें।
- ह्वाट्सएप पर रचनाएं स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संपादकीय पता : **PAYAS MAGAZINE**
Anil Jaiswal, 174-B, DDA Lal Qtrs,
West Punjabi Bagh, New Delhi-110026

धन्यवाद ज्ञापन

आप सबके सहयोग से जनवरी 2021 से बच्चों के लिए एक ऑनलाइन निशुल्क बाल पत्रिका निकालने की जो योजना थी, वह मूर्त रूप लेने में सफल रही। अब पायस का नया 12वां अंक आप सबके सामने है।

इस राह पर आप सबके भरोसा चला। सब साथियों का सहयोग मिला। जिन साहित्यकार साथियों से रचना मांगी, उन्होंने सहर्ष अपनी रचना के साथ शुभकामनाएं भी दीं। कुछ साथियों ने निशुल्क रचना देकर हिम्मत बंधाई, तो कुछ चित्रकार साथियों ने नाम मात्र का शुल्क लेकर कहानियों के लिए सुंदर चित्र बनाए। बहुत से साथियों ने पत्रिका को आर्थिक मदद दी, जिससे पत्रिका के लिए आवश्यक खर्चों को पूरा किया गया।

यहां उन साथियों को नमन, जिन्होंने पत्रिका के लिए आर्थिक मदद की।

1. मोनिका अग्रवाल
2. रेनू मंडल
3. पंकज चतुर्वेदी
4. हेमंत यादव
5. डॉ. शील कौशिक

एक अपील

पत्रिका तैयार करने में धन की आवश्यकता होती है। तमाम खर्चों के बावजूद यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो पढ़ने के बाद 20 रुपए इसका शुल्क मानकर सहयोग करें।

धन्यवाद

भुगतान करना चाहें, तो

1 प्रति : 20 रुपए, एक वर्ष : 240 रुपए

एकमुश्त सहयोग : इच्छानुसार

आगे भी आप सबका सहयोग रहा, तो हम सब मिलकर इस पत्रिका को एक ऐसी ऊंचाई देने में सफलता प्राप्त करेंगे कि लोग हर महीने इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार करेंगे।

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA

Anil Kumar Jaiswal

S/A no- 20155811729

Ifsc code SBIN0005943

Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609

PHONEPE : 9810556533

GOOGLE PAY : 9810556533

ANIL JAISWAL

संपादक : अनिल जायसवाल

9810556533, 7982014609

email : **payasmagazine@gmail.com**

खुद को गर्वित पाते फूल

डाल-डाल खिल जाते फूल।
सबके मन को भाते फूल।।

गमले,क्यारी, उपवन में भी,
हँसते और लुभाते फूल।

जंगल और पहाड़ों पर तो,
शूल संग मुस्काते फूल।

तेज हवाओं के सँग में,
झूम-झूम इठलाते फूल।

काले भँवरे गीत सुनाएँ,
ये मकरंद लुटाते फूल।

बनकर हार गले में सजते,
मानव को हर्षाते फूल।

ईश्वर के चरणों में चढ़कर,
खुद को गर्वित पाते फूल।

अपने लेखक को जानिए

सन्तोष कुमार सिंह : सेवानिवृत्त इंजीनियर। अब स्वतंत्र लेखन। बाल कविताएं, बाल गीत, बाल कहानियां और बाल पहेलियां लेखन। बाल साहित्य की 30 पुस्तकें प्रकाशित।

फूल उपवन के

अनिल जायसवाल

चंदननगर अपने नाम के अनुरूप ही सुंदर नगर था। यहां के राजा रवि प्रताप ने बहुत प्यार से इस नगर का निर्माण करवाया था। पहाड़ी की तलहटी में बसे इस राज्य की खासियत थी कि इसके एक कोने में चंदन के पेड़ों का जंगल था। जब हवा चलती, तो सारा नगर चंदन की खुशबू से महक उठता।

समय के साथ राजा रवि प्रताप बूढ़े हुए और उनके बेटे अमर सिंह ने राजपाट संभाल लिया। अमर सिंह की मां महारानी संगीता को पूजा पाठ से बहुत लगाव था। राजा रवि प्रताप ने उनके लिए अलग से फूलों का एक उपवन बना दिया था, जहां से रोज फूल तोड़े जाते और उनसे महारानी संगीता अपने देवताओं की पूजा करतीं।

जब अमर सिंह राजा बना, तो उसने सोचा कि मेरे राज्य में चंदन की खुशबू तो रहती ही है, अगर यहां फूलों की खुशबू भी बढ़ जाए, तो सभी मेरे राज्य का गुणगान करेंगे।

बस फिर क्या था! अमर सिंह ने अपने बहुत सारे विश्वासपात्र लोगों को अलग-अलग दिशाओं में भेज दिया कि जहां भी कोई अनोखा फूल दिखे, उसके पौधे लेकर आओ।

ऐसा ही हुआ। हजारों तरह के रंग-बिरंगे अनोखी खुशबुओं वाले पौधों को लेकर उसके लोग वापस आए और माली ने पहले के उपवन का विस्तार करके उसमें उन्हें रोप दिया। चमेली, गुलाब, कुमुद, कुमुदिनी, गेंदा, गुढ़हल, कामलता, चमेली, चांदनी, नाग चम्पा, छूईमूई, गुल मेहंदी ब्रम्ह कमल, केतकी, पारिजात, एनीमोन, जर्मेनियम, मार्श, गेंदा, प्रिभुला, पोटेन्टिला, हिमालयी नीला पोस्त, तारक, डेलफिनियम, साइप्रिपेडियम, बछनाग एवं रोडोडियोड्रान आदि, न जाने कितने तरह के पौधे एक साथ उपवन की शोभा बने।

इन फूलों की देखभाल के लिए मालियों की फौज खड़ी कर दी गई। सब के प्यार और देखभाल से उपवन फूलों से भर गया। एक से बढ़कर एक फूल और उनकी खुशबू से पूरा चंदननगर वास्तव में सुगंध नगर बन गया था।

इन नए फूलों के आने से पुराने फूलों का महत्व कम हो गया था। अब महारानी की दासियां आतीं, तो नए फूलों को चुनतीं, पुराने फूलों को वैसे ही

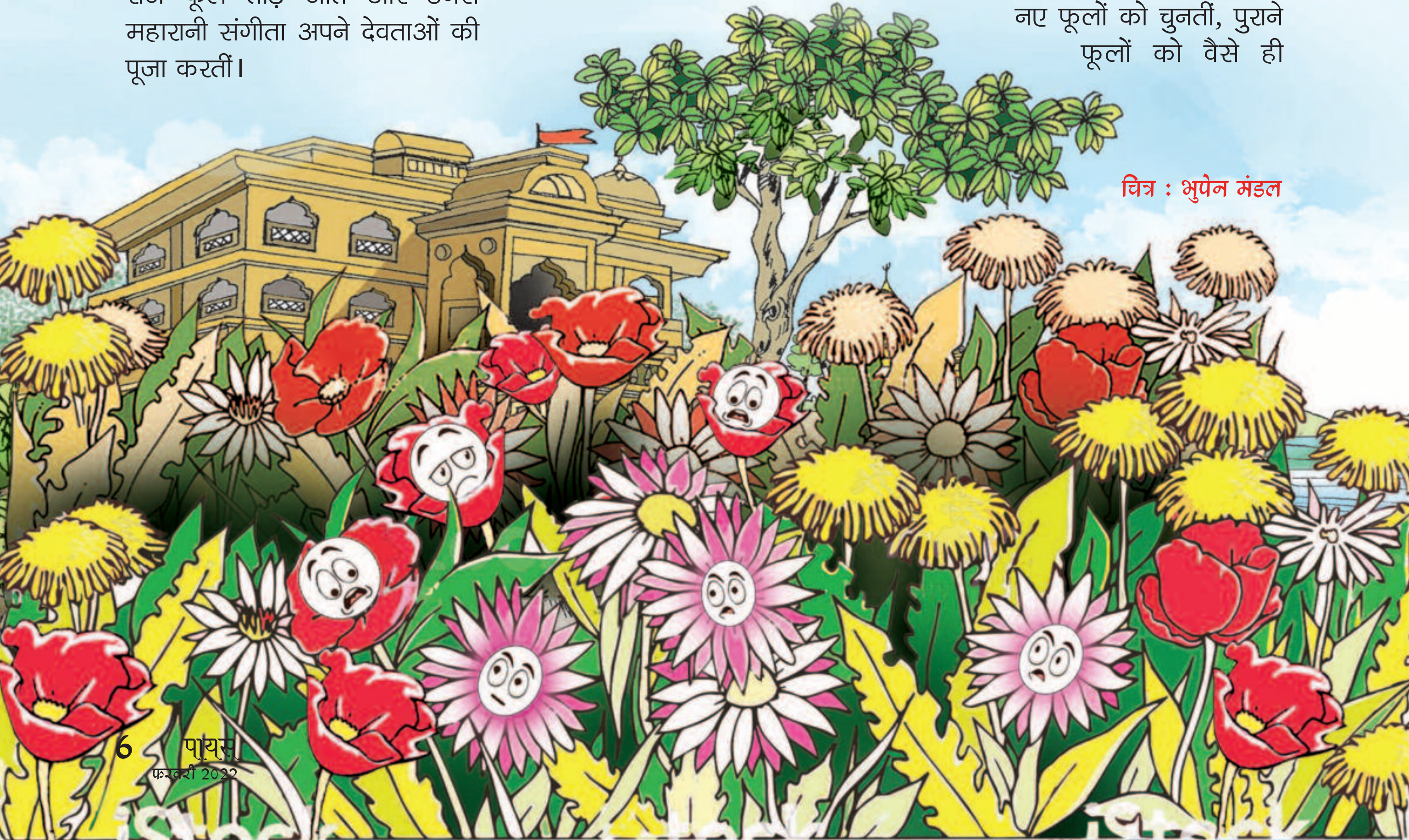

चित्र : भुपेन मंडल

छोड़ देतीं। वे पौधों पर लगे-लगे मुरझा जाते और कुछ दिनों बाद सूखकर मिट्टी में मिल जाते।

नए फूल यह देखते, तो उन्हें दुख होता। एक दिन नए फूलों ने पुराने फूलों से कहा, "यह तो इस राज्य की बहुत बुरी बात है कि नए के आने पर पुराने की पूछ कम कर देते हैं। हमें तो यह बहुत बुरा लगता है।"

पुराने फूलों ने हंसते हुए कहा, "यह तो इस दुनिया की रीत है। सब उगते सूरज को ही सलाम करते हैं। पर हमें बुरा नहीं लगता। हमें तो इस उपवन में लगाया ही गया है, ईश्वर की चरणों में चढ़ाए जाने के लिए। यह सुख हमने खूब उठाया। अब यह सुख तुम्हारे हिस्से में है। इसलिए, हमारे लिए शोक मत करो और अपना कर्म करते जाओ।"

पुराने फूलों की बात सुनकर नए फूल चुप हो गए। पर उनमें से एक पहाड़ी फूल ने कहा, "बात आपकी ठीक है। परंतु ऐसा होना नहीं चाहिए। सब का महत्त्व बराबर है और यह बात राजा और उनके परिवार की समझ में आनी जरूरी है, क्योंकि अगर वह सबको बराबर समझेंगे तो यही नीति राज्य पर भी लागू करेंगे और राज्य में अमीर-गरीब सबको राजा का प्यार मिलेगा।"

अगले दिन उस पहाड़ी फूल ने बाकी नए फूलों से मंत्रणा की। उसने अपनी योजना बताई, तो सुनकर सारे फूल बहुत खुश हुए।

अगले दिन सूरज निकलने के बाद महारानी की दासियां फूल चुनने उपवन में आईं, तो आश्चर्य से उनकी आंखें फटी की फटी रह गईं। नए फूलों के सारे पौधों पर लगे फूल मुरझा गए थे। हारकर उन्होंने पुराने पौधों से फूल तोड़े और महारानी के पास लेकर पहुंच गईं।

महारानी को भी नए फूलों की आदत हो गई थी। पुराने फूल देखकर व चौंकी और गुस्से से दासियों से पूछा, "नए फूल क्यों नहीं लाईं?"

एक दासी ने डरते-डरते जवाब दिया, "महारानी जी, पता नहीं क्या हुआ कि नए फूलों के पौधों पर एक भी ताजा फूल नहीं था। सारे फूल मुरझा गए थे।"

सुनकर महारानी को मालियों पर बहुत गुस्सा आया। बात अमर सिंह तक पहुंची। इतने जतन से लगाए गए उपवन के पौधे सूख रहे हैं, सुनकर अमर सिंह को बहुत गुस्सा आया। उसने तुरंत सारे मालियों को पकड़वाकर कारागार में डाल दिया।

जब शाम हुई, तो महारानी और

अमर सिंह टहलने के लिए उपवन में पहुंचे। अब उनकी आंखें फटने की बारी थी। सारे नए पौधों में एक से बढ़कर एक फूल खिले हुए थे। देखकर अमर सिंह को बहुत गुस्सा आया। अब उसके गुस्से का कहर दासियों पर टूटा। सारी दासियां भी कारागार में पहुंच गईं। दोनों मां-बेटे टहलना छोड़ महल में लौट आए।

अगले दिन दासियां तो थी नहीं, अमर सिंह ने कुछ सैनिकों को फूल तोड़ने के लिए भेजा। सैनिक लौट कर आए और अमर सिंह से बोले, "महाराज एक भी पौधे पर ताजा फूल नहीं है। सारे मुरझाए हुए हैं।"

अमर सिंह भागा-भागा उपवन में पहुंचा। सैनिकों ने सही सूचना दी थी। कल शाम को जो फूल खिले हुए थे, वे सारे मुरझा गए थे।

यह देख अमर सिंह बहुत दुखी हुआ। पहले तो उसने मालियों और दासियों को रिहा करने का हुक्म दिया। फिर खुद पुराने फूलों को तोड़कर पूजा के लिए लेकर मां के पास पहुंचा। उसने महारानी को पुराने फूल दिए और सारी बात बताई।

अमर सिंह के बताने पर महारानी भी सोच में पड़ गईं। ऐसा लगातार एक सप्ताह हुआ। फूल दिन में खिल जाते और अगले दिन तोड़ने के समय पर मुरझा जाते। अमर सिंह इस गोरखधंधे को समझ नहीं पा रहा था। आखिर वह राजगुरु के पास पहुंचा। सुनकर राजगुरु ने कहा, "मैं खुद उपवन का निरीक्षण करूंगा।"

राजगुरु दोपहर को उपवन में जा पहुंचे। पूरा उपवन नए और पुराने फूलों से खिला हुआ था। उन्होंने प्यार से कहा, "नए और पुराने फूल एक साथ कितने सुंदर लग रहे हैं। आज मैं अपने देवता की पूजा के लिए इन्हें लेकर जाऊंगा।" फिर हाथ जोड़कर फूलों से बोले, "हे फूल देवता, मुझे अपने देवता को अर्पण करने के लिए आपके कुछ फूल लेने हैं। मुझे आज्ञा दीजिए।"

उसके बाद गुरु जी ने कुछ नए फूल और कुछ पुराने फूल तोड़े और ले जाकर अपने देवता के चरणों में अर्पित कर दिए।

अगले दिन सुबह जब राजगुरु अमर सिंह के साथ उपवन में पहुंचे, तो पूरा उपवन खिले फूलों से भरा हुआ था। खुश होकर अमर सिंह ने खूब सारे नए फूल तोड़े और अपने मां को पूजा के लिए दिया।

वह दिन गुजरा और अगले दिन फिर पुरानी कहानी दोहराई गई। उपवन में तोड़ने के लिए एक भी नया

पुल नहीं था। अमर सिंह ने तुरंत राजगुरु यह सूचना दी।

राजगुरु ने आकर देखा, तो उनकी समझ में सारी बात आ गई। उन्होंने अमर सिंह से कहा, "तुम एक राजा हो और एक राजा का कर्तव्य होता है कि सबको एक ही निगाह से देखे और सबके साथ एक सा व्यवहार करें। जरूर तुम से पहले जो दासियां और सैनिक यहां आए थे, वे केवल ताजे फूल ही तोड़कर जाते थे। पुराने फूलों को छूते भी नहीं थे, तुमने भी यही किया। इसलिए तुम्हारे इस भेदभाव का विरोध करने के लिए नए फूलों ने यह रास्ता अपनाया है। कल जब मैंने दोनों तरह के फूल तोड़े थे, तो अगले दिन सारे फूल खिले हुए थे। तुमने केवल नए फूल तोड़े और आज देखो, नए फूल फिर से मुरझाए हुए हैं। यह प्रकृति की तरफ से तुम्हें सीख है। अब यह तुम पर है कि तुम इस सीख को अपनाते हो या नहीं।"

अमर सिंह राजगुरु की बात समझ गया। वह बोला, "गुरुजी मुझसे या मेरे सैनिकों से यह भूल तो हुई है। और शायद यही भूल मैं राजकाज में भी करता रहा हूं। पर आज मुझे यह सीख मिल गई है। मैं आपके सामने इन फूलों से माफी मांगता हूं। अब मैं कभी भेदभाव नहीं करूंगा और यही नीति राजकाज में भी अपनाऊंगा।"

पता नहीं क्या जादू हुआ कि देखते-देखते अमर सिंह के सामने ही सारे नए पौधों पर लगे हुए मुरझाए फूलों में जान आने लगी और थोड़ी देर में सारे फूल खिलकर महकने लगे।

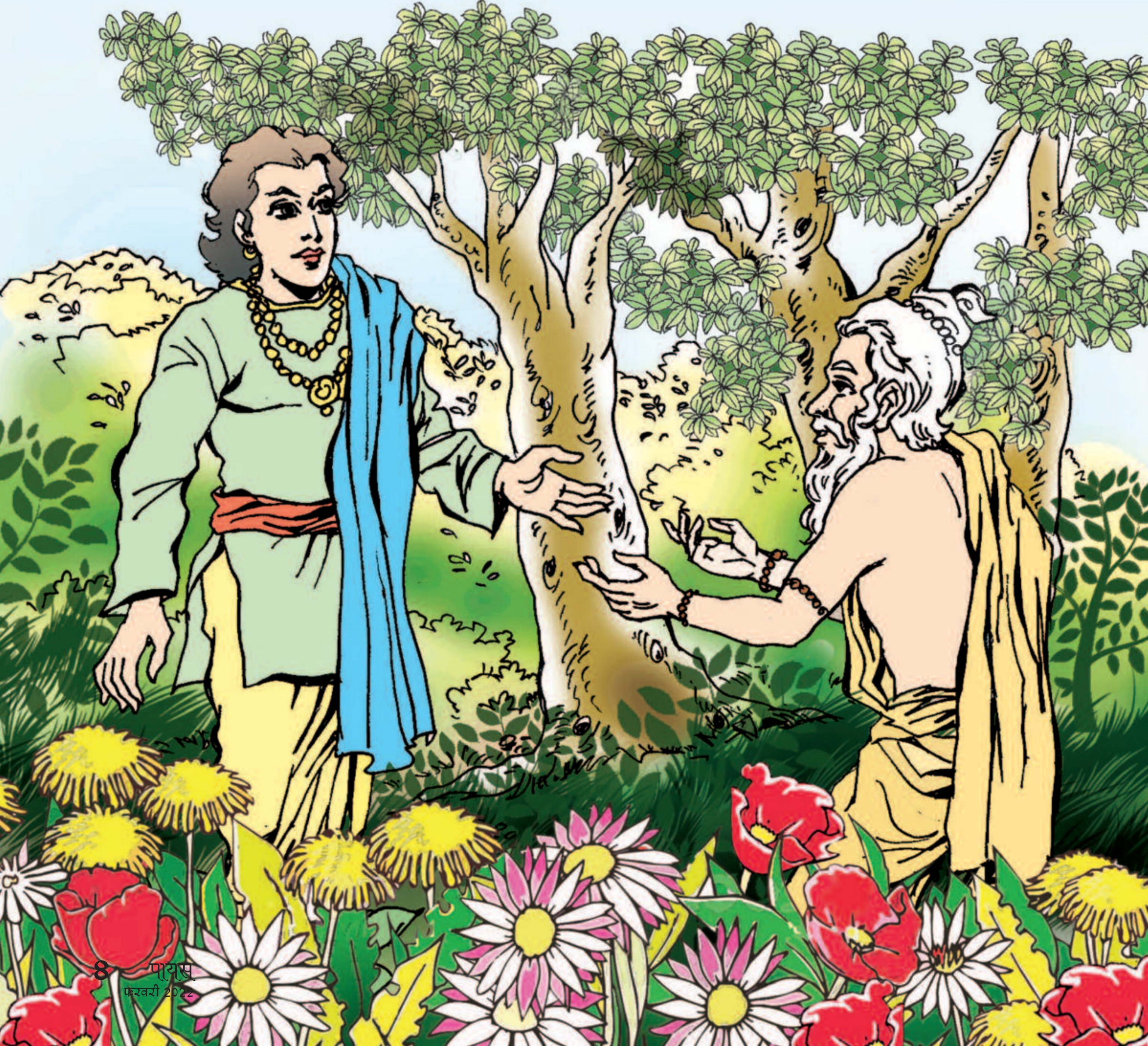

राम-राम गाती चिड़िया

सुबह-सुबह उठ जाती चिड़िया
राम-राम ही गाती चिड़िया।

जाने कहाँ-कहाँ पर उड़ कर,
घूम-घूम इठलाती चिड़िया।

कभी-कभी छत की मुंडेर पर,
मन सबका बहलाती चिड़िया।

पेड़-पेड़ पर जाकर बैठी,
यहाँ-वहाँ मुस्काती चिड़िया।

कभी-कभी आँगन मे आकर,
दाने भी है खाती चिड़िया।

नहीं किसी को दुख देती है,
सबको खूब रिझाती चिड़िया।

बच्चे आते इसे पकड़ने
फुर्र-फुर्र उड़ जाती चिड़िया।

सच बतलाऊँ सुनो दोस्तो,
मुझको तो है भाती चिड़िया।

अपने लेखक को जानिए

अरुण गिजरे : सेवा निवृत्त सहायक संचालक कृषि (जैविक खेती विशेषज्ञ)। साथ साथ साहित्य लेखन। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, समाचार पत्रों में लेख, कविताएं, लघुकथाएं, बाल कविताएं, खेती से संबंधित लेख आदि प्रकाशित।

जाना स्वर की देवी का

एक जमाना था, जब भारत के लोग किसी तरह के मनोरंजन के लिए नौटंकी, नाटक, रेडियो और फिल्मों पर ही निर्भर रहते थे। न आज की तरह टेलीविजन, मोबाइल और ऑन डिमांड विजुअल या ऑडियो कंटेंट था। लोग कानों पर रेडियो लगाकर गाने सुनते दिख जाते थे।

दर्शक बोर न हो, इसलिए फिल्मों में जान-बूझकर गानों के लिए सिचुएशन बनाए जाते थे। जरूरी या गैर जरूरी इन गानों के कारण फिल्मों का आकर्षण बढ़ जाता था। कई बार तो फिल्में गानों की वजह से हिट हो जाती थी।

के. एल. सहगल, नूरजहां और सुरैया के दौर में एक दुबली-पतली महाराष्ट्रियन लड़की ने गाना शुरू किया। वो थीं हमारी सुरों की रानी लता मंगेशकर।

लता मंगेशकर का जन्म 28 सितंबर, 1929 को मध्यप्रदेश के इंदौर शहर के एक मध्यम वर्गीय मराठी परिवार में हुआ था। उनके पिता पंडित दीनानाथ मंगेशकर मराठी रंगमंच से जुड़े हुए थे।

पांच वर्ष की उम्र में लता ने अपने पिता के साथ नाटकों में अभिनय शुरू कर दिया और इसके साथ ही वह अपने पिता से संगीत की शिक्षा लेने लगीं। फिर लता ने उस्ताद अमानत अली खां से शास्त्रीय संगीत सीखना शुरू किया, लेकिन विभाजन के दौरान खां साहब पाकिस्तान चले गए। बाद में पंडित तुलसीदास शर्मा और उस्ताद बड़े गुलाम अली खां ने भी उन्हें संगीत सिखाया।

वर्ष 1942 में तेरह वर्ष की छोटी उम्र में ही लता के सिर से पिता का साया उठ गया और परिवार की जिम्मेदारी उनके ऊपर आ गई। इसके बाद उनका पूरा परिवार पुणे से मुंबई आ गया। परिवार की आर्थिक जिम्मेदारी को उठाते हुए लता ने फिल्मों में अभिनय व गाना गाना शुरू कर दिया। फिर उनकी मुलाकात संगीतकार गुलाम हैदर से हुई। उन्हें गाने मिलने लगे।

ये वो दौर था, जब इस दुबली लड़की के साथ-साथ मोहम्मद रफी और मुकेश भी अपनी जगह बना रहे थे। बाद में इसमें आशा भोंसले और किशोर कुमार के नाम भी जुड़े।

भारत रत्न : लता मंगेशकर
28 सितंबर, 1929-6 फरवरी 2022

लता मंगेशकर की आवाज का जादू सबके सिर पर चढ़ा। कहते हैं, बड़े गुलाम अली खां ने एक बार चलते-चलते रेडियो पर लता का गाना सुना। उनके मुख से निकला, "कमबख्त कभी बेसुरा नहीं होती।"

सी. रामचंद्र के संगीत निर्देशन में लता ने प्रदीप के लिखे गीत पर एक कार्यक्रम के दौरान एक गैर फिल्मी गीत 'ए मेरे वतन के लोगों..' गाया। इस गीत को सुनकर प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की आंखों में आंसू आ गए थे।

लता दीदी ने हर संगीतकार के साथ गाना गाया। उनके गीतों के सहारे नए संगीतकार सफलता का स्वाद चखते और चल निकलते। उन्होंने फिल्मों की कमाई में संगीत के योगदान की चर्चा कर संगीत से जुड़े लोगों का हिस्सा मांगा। गायकों में ही फूट पड़ी, अंततः उनकी मांग मानी गई और संगीत से जुड़े लोगों को उनका हक मिला।

50 साल काम करने के बाद उन्होंने 21वीं सदी के आरंभ में फिल्मों में गाने से किनारा कर लिया। वह मानती थीं कि नए संगीतकार के लिए वह इतनी वरिष्ठ थीं कि वे उनके साथ काम करने से घबराने से लगे थे। साथ ही गीतों के गिरते स्तर ने भी उन्हें इस निर्णय पर पहुंचने में सहायता की।

उनपर एकाधिकार का आरोप भी लगा। कहते थे कि वह किसी नए को पनपने नहीं देतीं। पर ऐसा होता, तो उनसे कभी भी न गवाने वाले ओ. पी नय्यर सफल संगीतकार न बनते।

उम्र के इस दौर में भी वह सोशल मीडिया के माध्यम से सबसे जुड़ी थीं। क्रिकेट में उनकी असीम रुचि थी। 1983 के विश्वकप विजेता क्रिकेट टीम के लिए पैसे इकट्ठे करने के लिए उन्होंने मुफ्त में कार्यक्रम किया था।

नए साल में लता दीदी बीमार हुईं और उन्हें कोविड भी हुआ। अंततः 6 फरवरी 2022 को भारत रत्न लता दीदी सबको छोड़कर चली गईं।

अपने लेखक को जानिए

अंजीव अंजुम : दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी संस्कृति मंत्रालय का बाल साहित्य श्री पुरस्कार, हिंदुस्तानी अकादमी का कवि कुंभनदास ब्रजभाषा पुरस्कार सहित 100 से अधिक पुरस्कार। 172 पुस्तकें हिंदी, ब्रजभाषा, राजस्थानी एवं अंग्रेजी में प्रकाशित हैं। बाल साहित्य की कहानी, कविता, गीत, गजल, नाटक, जीवनी, यात्रा वृतांत, पहेली विधा में श्रेष्ठ कार्य।

गायकी का ताज खो गया

एक स्वर अनंत में विलीन हो गया।
गायकी का ताज मानो आज खो गया।।

भारत की आन, बान, मान और शान थी।
सुर साज की धरा पर एक आसमान थी।
होठ उसके छूके गीत सब का हो गया।
गायकी का ताज मानो आज खो गया।

जिसके कंठों ने उतारी भाव आरती ।
सरगमों पर झूमती थी जिसके भारती।
पावन निनाद वही पंचभूत हो गया।
गायकी का ताज मानो आज खो गया।

जिसकी लता सुरों से धड़कनों में रहा नाद।
नाम दिल पे अक्स रहेगा नयन में याद।
सुर का एक युग समय के संग सो गया।
गायकी का ताज मानो आज खो गया।

कोकिला के बिना लगे सूना सूना साज।
इक लता में खो गई ज्यों हिंद की आवाज।
मौन साज सुर का दुख में डुबो गया।
गायकी का ताज मानो आज खो गया।

वह फिर लौट आया

वह बहुत ही सर्द सन्नाटे से भरी रात थी। सर्दी के आतंक से सड़कें, गलियां सहमी और खामोश थीं। पेड़-पौधे कोहरे की चादर में लिपटे कांप रहे थे। लॉन में यूकेलिप्टस के पत्ते आंसू बहा रहे थे। यह सब देख जैसे सितारे भी थरथरा उठे थे ।

उस समय रात के लगभग साढ़े बढ़ बजे होंगे। लेकिन श्रीमती वर्मा अभी तक जाग रही थीं और नींद की प्रतीक्षा उसी तरह कर रही थीं, जिस तरह प्लेटफार्म पर कोई यात्री लेट हुई ट्रेन की प्रतीक्षा करता है।

श्रीमती वर्मा की नींद उड़ने का कारण कोई चिंता भी हो सकती थी और कड़ाके की सर्दी भी, जो परीक्षा में ड्यूटी देने वाले मास्टर जी की तरह सब पर कड़ी नजर जमाए थी।

लेकिन वास्तव में उनकी नींद उड़ने का कारण किवाड़ की दरार से आती पतली सी आवाज थी, कूं-कूं-कूं, जो क्रमशः कातर होती जाती थी।

"यह कम्बख्त तो फिर लौट आया शायद।" उन्होंने कुढ़ते हुए सोचा।

"कितना ढीठ है जरा सा पिल्ला? खुद इतनी दूर छोड़कर आई थी, फिर भी सूंघ-सांघकर लौट आया। यह सारी करामात दीपू की है।"

दीपू श्रीमती वर्मा, यानी शोभादेवी का भांजा है। बड़ी ननद ने यहां पढ़ने के लिए भेजा है, पर इसे शोभादेवी ही जानती हैं कि दीपू का मन पढ़ाई में कम और कुत्ते-बिल्ली के बच्चों से खेलने और गिलहरियों को चना-मूंगफली खिलाने ज्यादा लगता है। कहीं किसी पेड़ पर कोई घोंसला दिख गया, तो समझो उसका दिन वहीं बीतना है। यही वजह है कि पढ़ाई के बहाने दीपू अक्सर सक्सेना जी के बगीचे में जा बैठता है।

शोभादेवी को दीपू के इन शौकों से कोई खास आपत्ति नहीं है लेकिन घर में किसी जानवर के बच्चे, खास तौर पर कुत्तों को लाने की सख्त मनाही है क्योंकि वह काफी सफाई-पसंद महिला हैं।

लेकिन पिल्लों को देख, दीपू का खुद पर काबू नहीं रहता है। मामी की

चित्र : भुपेन मंडल

वर्जना के बावजूद उसके साथ कोई न कोई पिल्ला या किसी जानवर का बच्चा देखा जा सकता है।

उस दिन भी, यह जानते हुए भी कि पिल्ले को देख, मामी का पारा चढ़ जाएगा, वह एक काले गोल-मटोल गुलफुले से पिल्ले को ले आया। मामी ने देखते ही आदेश सुनाया, “ घर में आना है, तो इसे कही बाहर छोड़कर आ, नहीं तो तू भी इसके साथ गलियों में भटक। मैं जीजी से कह दूंगी कि...”

“मामी! मेरी बात तो सुनो प्लीज।” गजब का ढीठ है दीपू भी। डरने का अभिनय करता हुआ पिल्ले को लिए ही अंदर आ गया।

“मैं आपको नाराज नहीं करना चाहता था मामी, सच्ची, विद्या-कसम। यह बेचारा तीन दिन से भूखा है। कोई बेरहम इसकी मां को कुचलकर भाग गया। बेचारा उसी जगह बैठा उसका इंतजार करता रहता है। मामी, मैं इसे छोड़ आऊंगा सच्ची, बस जरा सा दूध दे दो।”

शोभादेवी ने दूध इस शर्त पर दिया कि दीपू आज ही अभी उसे कहीं दूर छोड़ आएगा। वह बोलीं, “एक बार टिक गया, तो जाने के नाम भी नहीं लेगा यह। देखो न दूध को कैसे लपलप करके पी गया।”

शर्त के अनुसार दीपू पिल्ले को छोड़ आया, पर शाम को वह घर की चौखट पार कर रहा था।

“मैं दीपू की चालबाजी खूब समझती हूं। जरूर यहीं-कहीं छोड़कर आया होगा जानबूझकर।” शोभादेवी ने अपने पति श्री वर्माजी को बताया और कहा, “ मुझे दीपू पर जरा भी भरोसा नहीं। आप खुद इसे कही दूर छोड़कर आना।”

वर्माजी पत्नी के निर्देशानुसार उस पिल्ले को दूर किसी गली में छोड़ आए, पर यह क्या, दो दिन बाद वे महाशय शान से वर्माजी के द्वार की तरफ चले आ रहे थे। यह देख शोभादेवी ने अपना माथा पीट लिया। मारे खीज के उसे पैर से दूर धकेला, मन ही मन दीपू को बुरा भला कहा और फिर खुद जाकर उसे स्टेशन के उस पार एक नाले के किनारे छोड़ आईं।

“अब नहीं आएगा।” शोभादेवी ने तब इत्मीनान से सोचा था।

“लेकिन मैं तो आ गया।” बाहर से लगातार आ रही कूकने की आवाज जैसे यही कह रही थी।

“आ गया है तो मर।” शोभादेवी ने रजाई को चारों ओर से दबाते हुए अपने आपको चिंतामुक्त किया।

रात के साथ सर्दी की भी गहराई बढ़ती जा रही थी। दीपू और वर्माजी गहरी नींद में थे, पर शोभादेवी रजाई के अंदर भी जमे जा रही थीं।

“जब अंदर कमरे में, रजाई के भीतर यह हाल है, तो बाहर क्या होगा? कहीं वह ठिठुरकर मर-मरा न जाए।” इस विचार के बाद वह लेटी न रह सकीं। किवाड़ खोलकर देखा। पिल्ला दीवार से चिपका कांप रहा था, मानो ठंड से बचने को दीवार के अंदर घुस जाना चाहता हो। उसका कूकना धीमा हो गया था, जैसे बहुत रो लेने पर बच्चा निढाल हो जाता है।

शोभादेवी ने पिल्ले को उठाकर शाल में लपेट लिया और लाकर एक रजाई में दबा दिया। उन्हें महसूस हुआ कि नन्ही सी धडकनों से उसका कोमल शरीर हिल रहा था। हलकी सी घुरघुराहट उसकी राहत भरी नींद की सूचना थी।

अब शोभादेवी को नींद आने लगी थी। ❀

अपने लेखक को जानिए

गिरिजा कुलश्रेष्ठ : व्याख्याता (हिन्दी), कविता, गीत, कहानियां, लघु-कथाएं, बाल-कहानियां, कविताएं, लघुनाटिकाएं विभिन्न समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन। छोटी-बड़ी दस पुस्तकें प्रकाशित। दो बाल कहानियां चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट से पुरस्कृत।

अपना योगदान दें

पायस बच्चों को ध्यान में रखकर पायस का प्रकाशन रंगीन चित्रों के साथ आप सबके सहयोग से हो पा रहा है।

रचना ही नहीं,
आर्थिक योगदान देकर भी
इस प्रयास में सहयोगी बनें

फूल खिले इतिहास में

देवेंद्र मेवाड़ी

दोस्तो, वसंत आ गया है। कलियां खिलने लगी हैं और चारों ओर फूलों की बहार मन मोहने लगी है।

लेकिन जानते हो, एक समय ऐसा भी था, जब धरती पर फूल नहीं थे! करोड़ों वर्ष पहले की बात है। धरती पर चारों ओर बड़े-बड़े दलदल फैले हुए थे। उनमें ऊंचे-ऊंचे मॉस और फर्न के पेड़ उगते थे। दलदलों में विशालकाय डाइनोसॉर विचरते थे। फिर ऐसे पेड़ों का जन्म हुआ, जिनमें काठ के फल और बीज बने। चीड़, देवदार उन्हीं के वंशज हैं।

लेकिन, पच्चीस से चौदह करोड़ वर्ष पहले धरती पर ऐसे पेड़-पौधों का जन्म हुआ, जिनमें फूल खिल उठे। पहले तो केवल पत्तों की हरियाली थी। चारों ओर हरा ही हरा रंग दिखाई देता होगा। फूल खिले और चारों ओर रंगों की बहार छा गई। फूल खिले, उनमें खूब बीज बने। बीज धरती पर गिरे। उनसे फिर हजारों फूलदार पौधे उग गए होंगे। दस-बारह करोड़ वर्ष पहले वे पूरी दुनिया में छा गए। तब विशालकाय डाइनोसोरों ने फूलों को सबसे पहले देखा होगा।

दोस्तो, वैज्ञानिकों का कहना है कि आज हमारी धरती पर पेड़-पौधों की 3 लाख 90 हजार से अधिक प्रजातियां हैं। उनमें 2 लाख 95 हजार से भी अधिक जातियां फूलदार पौधों की हैं। उनमें साल भर में खिलकर सूख जाने वाले पौधे हैं, तो सालों-साल खिलते रहने वाले पेड़-पौधे भी हैं। सुंदर लताएं भी हैं और झाड़ियां भी। दिन में फूलों के चटक रंगों से मन मोहने वाले पेड़-पौधे भी हैं, तो रात में भीनी-भीनी खुशबू बिखेरने वाले पेड़-पौधे भी। सच पूछो, तो फूलों ने अपने मनमोहक रंगों से हमारे जीवन में खुशियों के रंग भर दिए। सुंदर फूल देखकर हमारा मन भी खिल उठता है।

दोस्तो, धरती में फूल खिल उठे और इस तरह प्रकृति ने हमें फूलों की सौगात सौंप दी। हमारे पुरखों ने इनके गीत गाए। जब लिखना-पढ़ना सीखा, तो अपनी कविता-कहानियों में चुन-चुनकर फूल पिरो दिए। हमारे प्राचीन ग्रंथों में फूलों का खूब वर्णन किया गया है। रामायण और महाभारत में पलाश, चंपा,

अमलतास जैसे फूलदार पेड़ों का उल्लेख किया गया है। कमल के फूल न जाने कब से कविताओं में खिलते रहे हैं। व्याकरणाचार्य पाणिनी ने ईसा से लगभग 350 वर्ष पूर्व अपने ग्रंथ 'अष्टाध्यायी' में पलाश और कदंब के सुंदर फूलों का वर्णन किया।

शूद्रक ने 100 ईस्वी पूर्व में संस्कृत भाषा में अपना प्रसिद्ध नाटक 'मृच्छकटिकम्' लिखा। उसमें बाग-बगीचों में खिले कमल तथा दूसरे फूलदार वृक्षों का वर्णन किया गया है। बौद्धकाल में प्रसिद्ध कवि अश्वघोष ने 'बुद्ध चरितम्' ग्रंथ लिखा। कवि ने नंदनवन का वर्णन किया है जिसमें गौतम बुद्ध फूलों से लदे वृक्ष और कमल के सुंदर पुष्प देखते हैं। बौद्धकाल में मठों और स्पूतों के चारों ओर भिक्षु फूलों की बगिया लगाते थे।

और, महाकवि कालिदास के ग्रंथ तो फूलों के वर्णन से भरे पड़े हैं। उन्होंने कमल, कचनार, पलाश, पारिजात और माधवी लता जैसे न जाने कितने रंग-बिरंगे, भीनी सुगंध बिखेरते लता-गुल्मों का वर्णन किया है।

फूलों ने मानव का इतना मन मोहा कि उसने इनके सुंदर चित्र बनाए। अपने भित्तिचित्रों में उकेरा। कपड़ों में काढ़ा और बुनाइयों में बुना। बेलबूटों से चीजें सजाईं। फूलों की सौगात दी, फूलमालाएं पहनाईं, फूलमालाओं से घर सजाया। पंखुड़ियों की अल्पनाएं बनाईं। फूलों का इत्र बना कर सुंगध फैलाई। फूलों से शुभकामनाएं दीं, पंखुड़ियां बिखेर कर स्वागत की रस्म निभाई। अपने घर-आगंन को फूलों से सजाया, फूलों से महकाया। दोस्तो, हमारी पूरी संस्कृति फूलों में रसी-बसी है।

प्राचीन फूलों की तलाश करते-करते वैज्ञानिकों के हाथ फूलों के करोड़ों वर्ष पुराने 'फॉसिल' लगे हैं। उन्हें लगभग 13 करोड़ वर्ष पहले खिले एकवर्षी पौधों और करीब 9 करोड़ 30 लाख वर्ष पुराने मैग्नोलिया फूलों के पथराए अवशेष मिले हैं।

अच्छा, और सुनो। पहली सदी की बात है। रोम का सम्राट था नीरो। उसकी सेना में डायोस्कोरिडीज नामक प्रसिद्ध चिकित्सक था। उसने 'डी मटीरिया मेडिका' नामके पुस्तक लिखी। उसमें तमाम पेड़-पौधों का वर्णन किया। फूलों के चित्र बनाए। वह पुस्तक इतनी महत्वपूर्ण थी कि 1500 साल तक वही चली। वैसी कोई दूसरी पुस्तक नहीं लिखी गई। हमारे देश में आयुर्वेद में पौधों के औषधीय महत्त्व का वर्णन किया गया।

हमारे देश में फूलों की खेती को मुगल सम्राटों ने बहुत बढ़ावा दिया। बाबर ने न केवल हमारे देश के फूलों को गले लगाया बल्कि वह फारस और मध्य एशिया से भी एक से एक नायाब फूल लाया। सन् 1526 के आसपास वही गुलाब के पौधे हमारे देश में लाया। उसके जीवन की तमाम बातें 'बाबरनामा' में लिखी गई हैं। चलो, बाबरनामा में हमारे देश के फूलों के बारे में उसके विचार तुम भी पढ़ लो। वह लिखता है, 'हिंदुस्तान में फूल बहुत तरह के हैं। एक जासून है, जिसे गुलहड़ कहते हैं। लाल गुलाब के फूल जितना होता है, पर कली गुलाब की तरह नहीं खिलती। एक ही दिन में मुरझा जाता है। केवड़े की महक मन को मोह लेती है। यहां यास्मीन भी है। सफेद को चंपा कहते हैं। हमारे यास्मीन से बड़ा है। महक भी उससे बढ़ी-चढ़ी है।'

बादशाह अकबर भी बाग-बगीचों और फूलों का बड़ा शौकीन था। उसके

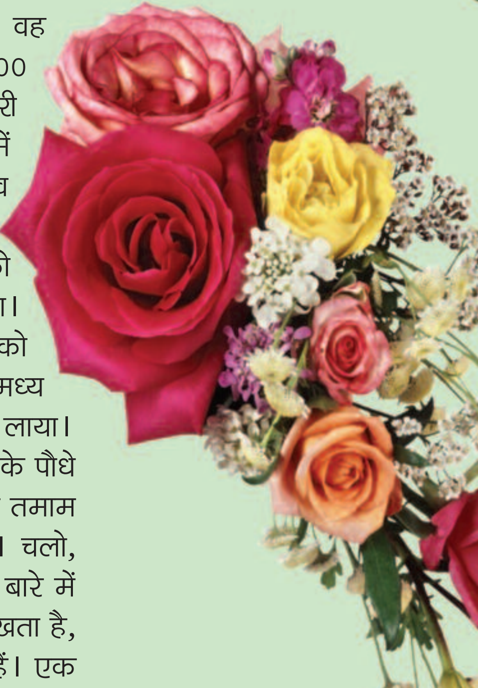

शासनकाल की बातें 'अकबरनामा' और 'आइने-अकबरी' नामक ग्रंथों में लिखी हैं। इन्हें अबुल फजल ने लिखा। अबुल-फजल ने 'आइने-अकबरी' में 21 सुगंधित फूलदार पौधों के फूलों के रंगों और खिलने के मौसम के बारे में बताया है। इनमें सेवती, चमेली, मोगरा, चंपा, केतकी, कुजा, जुही, नर्गिस, केवड़ा आदि का वर्णन किया है। इनके अलावा सूरजमुखी, कमल, गुलहड़, मालती, कर्णफूल, कनेर, केसर, कदंब आदि 29 सुंदर फूलदार पेड़-पौधों के बारे में भी बताया है।

जहांगीर तो प्रकृति प्रेमी था ही। उसे भारत के सुगंधित फूल बहुत पसंद थे। इनमें से भी चंपा की मीठी सुगंध उसने सबसे अच्छी बताई है। वह लिखा कि चंपा का एक ही पेड़ पूरे बाग को महका सकता है। उसने मौलश्री और केवड़े की सुगंध की भी तारीफ की है। ये बातें 'तुजुके जहांगीरी' पुस्तक में लिखी गई हैं। यहां तुम्हें एक बात बता दूं दोस्तो। गुलाब के इत्र की खोज नूरजहां की मां ने की थी। तुम यह तो जानते ही हो ना कि नूरजहां बादशाह जहांगीर की रानी थी। नूरजहां और जहांगीर को गुलाब बहुत अच्छे लगते थे।

दोस्तो, गुलाब, नरगिस, आइरिस, कार्नेशन, लिली, डेफोडिल, ट्यूलिप आदि फूल मुगल बादशाह हमारे देश में लाए। उसके बाद जब पुर्तगाली और अंग्रेज आए, तो वे भी हमारे देश में विदेशी पौधे लाए। हमारे देश से अनेक सुंदर फूलदार पेड़-पौधों को विदेश ले गए। अंग्रेज वनस्पति विज्ञानियों ने तो नए फूलों और दूसरे पेड़-पौधों की तलाश में देश का चप्पा-चप्पा छान डाला। उन्हें नए-नए सुंदर फूल मिले। जैसे प्रइमुला, एनीमोन, आइरिस, लिलियम, एस्टर, बालसम, बिगोनिया, बुरोंश, कुंज और आर्किडों की अनेक जातियां फ्रैंक किंगडनवार्ड नामक वनस्पति विज्ञानी ने असम और वर्मा के जंगलों को छानकर पॉपी की नीले फूलों वाली नई जाति खोज डाली। हिमालय, उत्तरपूर्व और अन्य इलाकों के फूलों की तमाम जातियां, वे इंग्लैंड ले गए।

इसके सौ-डेढ़ सौ साल बाद सुदूर स्वीडन में एक वनस्पति विज्ञानी ने फूलों को पढ़ते-पढ़ते पता लगा लिया कि पौधों का विवाह फूलों में ही होता है। उन्हीं में पौधों के माता-पिता होते हैं। उन्हीं में बीज बनते हैं। उसने फूलों के आधार पर पेड़-पौधों का नामकरण किया। वह पौधों का पुरोहित बन गया। उस महान वैज्ञानिक का नाम था-कारोलस लिनेअस। उसने देखा, फूलों के खिलने का अपना-अपना समय होता है। इस बात को ध्यान में रख कर उसने अपने नगर उपसाला में एक फूलघड़ी बनाई। उस फूलघड़ी में सुबह सबसे पहले सैल्सिफाई पौधे के फूल खिल जाते। फिर अपने-अपने समय पर दूसरे फूल खिलते। आधी रात में टार्च थिसिल के फूलों की पंखुड़ियां बंद होने के साथ ही उस दिन का समय पूरा हो जाता!

हमारे देश के वे सुंदर सजीले फूल आज भी इंग्लैंड के क्यू-गार्डन और एडिनबर्ग गार्डन में उग रहे हैं। वहां इन्हें बचाया जा रहा है।

हमारे देश के बाग-बगीचों और घर-आंगन की फुलवारियों में भी एक से एक सुंदर फूलों की जातियां उगाई जा रही हैं।

तो दोस्तो, वसंत आ गया है और हजारों रंग-बिरंगे फूल खिल कर खिलखिला रहे हैं। न जाने कहां-कहां से कितनी सुंदर तितलियां और भौंरे आकर उनका पराग और मकरंद बटोरने लगे हैं। दोस्तो, हमें फूलों को बचाए रखना चाहिए। तभी तो तुम्हारी ही तरह आने वाले कल के बच्चे इन फूलों को देखकर समझ सकेंगे कि हमारी इस धरती पर कैसे-कैसे सुंदर फूल हैं।

प्रकृति की गोद से बच्चों की दुनिया में देवेंद्र मेवाड़ी

बच्चों के लिए लिखना आसान नहीं। खासकर उनके लिए वैज्ञानिक कथाएं लिखना या उनका विज्ञान से साक्षात्कार कराना और कठिन कार्य है। पर इस काम को बात-बात में या हंसते-हंसाते बच्चों को समझाना हो, तो देवेंद्र मेवाड़ी जैसे साहित्यकार कम ही नजर आते हैं।

देवेंद्र मेवाड़ी का जन्म 7 मार्च 1944 को उत्तराखंड के नैनीताल से आगे कालाआगर गांव में हुआ। उनके पिता श्री किशन सिंह मेवाड़ी एक किसान और पशुपालक थे। मां तुलसी देवी भी घर के साथ-साथ खेती का काम करती थीं। देवेंद्र तीन भाइयों और एक बहन में सबसे छोटे हैं।

कालाआगर गांव ठंडे इलाके में है, इसलिए उनका परिवार दो गांवों में बसा था। गरमी के दिनों में तो वे कालाआगर में रहते थे पर जैसे ही ठंड शुरू होती थी, उनका परिवार माल-भाबर के गांव ककोड़ चला जाता था, जो पहाड़ के ही गरम इलाके में था। इस तरह वह छह महीने ऊंचे पहाड़ पर रहते थे, तो छह महीने गरम इलाके वाले दूसरे गांव में। वसंत आता, पहाड़ के गांव में बुरांश के लाल-लाल फूल खिल जाते तो वे अपने पहाड़ के गांव में लौट आते। इस तरह बचपन से ही उनका प्रकृति से गहरा परिचय हो गया था।

देवेंद्र मेवाड़ी के माता-पिता तो स्कूल नहीं जा पाए थे, पर उनका सपना था कि उनका बेटा स्कूल में जरूर पढ़े। थोड़े बड़े हुए, तो देवेंद्र मेवाड़ी गांव की प्राइमरी पाठशाला में जाने लगे। यह आपको अजीब लगेगा, पर यह सच है कि देवेंद्र मेवाड़ी बचपन में दो पाठशालाओं में पढ़ते थे। यानी गरमियों में वह पहाड़ के गांव कालाआगर में पढ़ते थे और सर्दियों में माल-भाबर की जंगल वाली पाठशाला में। कहने को तो यह पाठशाला थी, परंतु वह तो बच्चों को प्रकृति से मिलाने का एक जरिया थी। वहीं उनका जंगल के जीव-जंतुओं से परिचय शुरू हुआ। गांव के आसपास घने जंगल थे। ऐसा जंगल जिसमें बाघ, तंदुआ, भालू, बंदर और बारहसिंघे जैसे जानवरों का बसेरा था। वहां अनगिनत रंग-बिरंगे पक्षियों और तितलियों को निहारा जा सकता था। वहीं देवेंद्र मेवाड़ी ने चिड़ियों की चहचहाहट को समझना शुरू किया, बादलों को बनते देखा, बनकर लोगों और खेतों पर बरसते देखा। बीजों को उगते और फसलों को पनपते देखकर जो जिज्ञासाएं उनके मन में आती थीं, उन्हें उनके माता-पिता और अध्यापक दूर करते थे। तभी उन्होंने ठान लिया था कि वह भी बड़े होकर बालकों को प्रकृति की रोचक बातें बताएंगे। देवेंद्र मेवाड़ी ने ककोड़ की जंगल वाली पाठशाला में पढ़ते समय पहली बार साक्षात

जंगल के जांबाज बाघ को देखा था, जो अपनी मदमस्त चाल से चलता हुआ जंगल से निकलकर उनके स्कूल की सामने वाली पहाड़ी तक बच्चों को दर्शन देने आ पहुंचा था।

पांचवीं तक प्रकृति की पाठशाला में पढ़ाई करने के बाद देवेंद्र मेवाड़ी दूसरे गांव के स्कूल में पढ़ने चले गए। वहीं जब वह छठी कक्षा में थे, तो मां चल बसीं। पर उनकी अंतिम इच्छा थी कि उनका बेटा देवेंद्र खूब पढ़े-लिखे। मां की इच्छा का देवेंद्र ने खूब ध्यान रखा और उस दूसरे गांव वाले स्कूल से इंटर की परीक्षा पास की। फिर आगे की पढ़ाई के लिए नैनीताल चले गए। वहां से उन्होंने अपने मन के अनुरूप वनस्पति विज्ञान में एम.एससी. किया। फिर अपने भावों को पाठकों तक पहुंचाने के लिए हिंदी में भी एम.ए.की डिग्री ली। बाद में राजस्थान विश्वविद्यालय से उन्होंने पत्रकारिता में पीजी डिप्लोमा भी लिया।

प्रकृति के चितेरे देवेंद्र मेवाड़ी की बीस साल की उम्र में ही पहली कहानी 1964 में युवक मासिक, आगरा में प्रकाशित हुई। उन्होंने पहला लेख 1965 में विज्ञान परिषद, प्रयाग के विज्ञान मासिक में लिखा। साथ ही दो लेख 'विज्ञान जगत' मासिक पत्रिका में लिखे। तब से, जो उनकी लेखनी ने अपने पाठकों को तृप्त करने का कार्य शुरु किया, वह आज भी और निखरकर पूरे शबाब पर है।

देवेंद्र मेवाड़ी ने आजीविका के लिए आरंभ में मक्का की फसल पर दिल्ली के पूसा इंस्टिट्यूट में अनुसंधान कार्य किया, तेरह वर्ष तक पंतनगर कृषि विश्वविद्यालय में किसानों की पत्रिका 'किसान भारती' का संपादन किया, तो करीब बाईस साल तक पंजाब नैशनल बैंक में जनसंपर्क के वरिष्ठ अधिकारी के रूप में भी काम किया। परंतु बैंक की नौकरी भी उनके अंदर के लेखक को कैद न कर सकी और वह एक के बाद एक बच्चों के लिए लेख और कहानियां लिखते चले गए। बाद में वे भारत सरकार के विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी मंत्रालय की संस्था 'विज्ञान प्रसार' में फैलो भी रहे। अब नौकरी से अवकाश प्राप्ति के बाद वह पूर्णकालिक लेखक हैं और बच्चों के लिए जोर-शोर से लिख रहे हैं।

देवेंद्र मेवाड़ी की मुख्य कृतियां विज्ञान से संबंधित हैं। बच्चों तक अपनी बात पहुंचाने के लिए उन्होंने एक किरदार या यों कहें, एक सूत्रधार को जन्म दिया है, जिसका नाम है देवीदा। देवीदा बच्चों के दोस्त हैं। वह बच्चों से घुल-मिलकर उन्हीं की भाषा में बात करते हैं और

हंसते-हंसाते उनकी विज्ञान से जुड़ी समस्याओं को दूर कर देते हैं या समझा देते हैं।

देवेंद्र के रचना संसार में बच्चों की उपस्थिति अनिवार्य है। वह कहते भी हैं-"मैं जब भी बच्चों के लिए लिखता हूं, तो जैसे वे मेरे मन के आंगन में आ जाते हैं। मुझसे बातें करने लगते हैं। बस, उन्हें जो बताता हूं, वही बताते-बताते लेख, कहानी या किताब बन जाती है।"

देवेंद्र मेवाड़ी की पत्नी हैं लक्ष्मी मेवाड़ी। उनकी तीन बेटियां और एक बेटा है।

देवेंद्र मेवाड़ी को कई पुरस्कार भी मिले हैं। विज्ञान लेखन के लिए उन्हें केन्द्रीय साहित्य अकादमी का 'बाल साहित्य पुरस्कार, राष्ट्रीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी संचार परिषद से 'राष्ट्रीय विज्ञान लोकप्रियकरण पुरस्कार' मिला है। इसके अलावा ज्ञान-प्रौद्योगिकी पुरस्कार, विज्ञान भूषण सम्मान, शिक्षा पुरस्कार, वनमाली विज्ञान-कथा सम्मान, दो बार सूचना और प्रसारण मंत्रालय से 'भारतेंदु पुरस्कार' तथा पर्यावरण एवं वन मंत्रालय का 'मेदिनी पुरस्कार' मिल चुका है। उन्हें राष्ट्रपति के हाथों से प्रतिष्ठित 'आत्माराम पुरस्कार' भी मिला है।

संपर्क सूत्र

देवेंद्र मेवाड़ी, सी-22, शिवभोले अपार्टमेंट्स, प्लॉट नम्बर-20, सैक्टर-6, द्वारका, नई दिल्ली-110075, मोब 9818346064
ई मेल dmewari@yahoo.com

देवेंद्र मेवाड़ी की बच्चों के लिए पुस्तकें

1. सौर मंडल की सैर
2. विज्ञान की दुनिया
3. नाटक-नाटक में विज्ञान
4. विज्ञान बारहमासा
5. विज्ञान और हम
6. फसलें कहें कहानी (हिंदी और पंजाबी)
7. सूरज के आंगन में
8. विज्ञान जिनका ऋणी है (भाग-1, हिंदी और पंजाबी में)
9. विज्ञान जिनका ऋणी है (भाग-2, हिंदी और पंजाबी में)
10. पशुओं की प्यारी दुनिया

इसके अलावा उन्होंने अपनी पुस्तक 'मेरी यादों का पहाड़' में अपने बचपन और गांव की कहानी लिखी है। यात्रा संस्मरण भी लिखे हैं। अपनी 'कथा कहो यायावर' पुस्तक में उन्होंने देश-प्रदेश में बच्चों को सुनाई प्रकृति और विज्ञान की बातें लिखी हैं।

सजा मिलेगी तो जरूर

घर से किताब-कॉपी लेकर शिवानी निकल तो गई, लेकिन ट्यूशन नहीं गई। रास्ते में पड़ने वाले पार्क में जाकर वह बैठ गई।

कल ट्यूशन में शिवानी के साथ जो हुआ, उससे उसका मन बहुत दुखी हो गया है। अपने मन की बात वह किसी से कह भी नहीं सकती, मम्मी से भी नहीं। मम्मी तो यही समझेंगी कि यह ट्यूशन से बचने के लिए झूठ बोल रही है। क्या उपाय है? रोज-रोज आकर पार्क में बैठ जाएगी!

वह पार्क में बैठी ही थी कि बगल से पांडे अंकल जाते दिख गए। उसने नजर बचाने की कोशिश की, लेकिन पांडे अंकल ने उसे देख ही लिया। उन्होंने पूछ भी दिया, "बेटे! यहां क्यों बैठी हो?"

"अंकल ट-ट्यूशन!" शिवानी ने हकलाते हुए जवाब दिया।

"ट्यूशन जा रही हो, फिर यहां? किसी की वेट कर रही हो क्या?" पांडे अंकल ने पूछा।

शिवानी को अचानक जवाब सूझ गया, "हां, अंकल, एक फ्रेंड आ रही है। उसके साथ ही ट्यूशन जाऊंगी।"

पांडे अंकल अच्छा कहकर चले गए। शिवानी धप्प से बेंच पर बैठ गई, "ओ! गॉड। कहीं पांडे अंकल पापा से यह बात न कह दें!"

शिवानी को डर लगने लगा। लेकिन यह डर कल के डर से कम ही था। कल वह ट्यूशन में सबसे पहले पहुंच गई थी और "अरे! शिवानी, तुम आ गईं?" कहते हुए सर ने उसे अपने से चिपटा लिया था। मारे डर और घबराहट के उसकी हालत खराब हो गई थी। उसने किसी तरह सर से खुद को अलग किया था और जाकर अपनी जगह पर बैठ गई थी। उसकी आंखें भर आई थीं। तभी दो-तीन बच्चे आ गए थे। उसने किसी तरह अपने आंसुओं को बहने से रोका था।

सभी बच्चों के आ जाने के बाद जब पढ़ाई शुरू हुई थी, तब पढ़ाई में उसका मन बिल्कुल नहीं लगा था। वह खुद को अपमानित महसूस कर रही थी। कभी उसके मन में आता कि, 'घर जाकर मम्मी को यह बात बता दूंगी और पुलिस में जाकर सर के खिलाफ शिकायत कर दूंगी।' फिर उसको लगता, 'क्या पता, पुलिस वाले मुझे ही परेशान करने लग जाएं?। मम्मी-पापा ही मेरी बात पर विश्वास न करें? कितनी तो घटनाएं घटती हैं ऐसी। टीवी पर, अखबार में रोज ऐसी खबरें देखने को मिल जाती हैं। मेरा चुप रहना ही ठीक होगा।' उसके मन में आया था।

'लेकिन कल से इस सर के पास पढ़ने तो हरगिज नहीं आना है।' उसने मन ही मन निश्चय किया था।

शाम के पांच बजे थे। पार्क में लोग आने लगे थे। कुछ बच्चे अपनी मां के साथ खेलने आ गए थे। 'कितना अच्छा होता, मम्मी भी मेरे साथ ट्यूशन जातीं?' उसके मन में आया।' लेकिन कब तक मम्मी साथ जातीं? छोटे में तो हर जगह वही ले जाती थीं। नौवीं क्लास में ट्यूशन पढ़ने कोई मम्मी के साथ तो नहीं जाता?'

पार्क में बच्चों को उछलते-कूदते-खेलते देख वह समय बिताने लगी। ट्यूशन का समय बीत जाने पर घर आ गई।

अब वह रोज-रोज यही करने लगी। घर से ट्यूशन के लिए निकलती, पार्क में जाकर बैठ जाती। हां, अब पार्क में ऐसी जगह बैठती जहां बगल की सड़क से जाने-आने वाले कोई अंकल या आंटी उसे देख न सकें।

चार-पांच दिनों तक तो ठीक रहा, फिर एक दिन उसने देखा कि कुछ अजीब-अजीब तरह के लड़के पार्क में आने लगे हैं और उसकी ओर देखकर अजीब-अजीब तरह से व्यवहार करने लगे हैं। उसे उस दिन और डर लगने लगा। किसी तरह समय बिताकर वह घर आई। उसने तय कर लिया कि अगले दिन से वह ट्यूशन के लिए घर से निकलेगी ही नहीं। मम्मी पूछेंगी तो साफ-साफ बता देगी।

अगले दिन स्कूल से लौटने पर मम्मी ने ही अचानक उससे पूछ लिया, "शिवानी! तुम आजकल ट्यूशन नहीं जा रही हो?"

"आपको किसने कहा?" शिवानी ने पूछा।

मिलन अपार्टमेंट की प्रिया तुम्हारे साथ ट्यूशन पढ़ने जाती है न? उसकी मम्मी मिली थीं। वह पूछ रही थीं कि शिवानी ट्यूशन क्यों नहीं आ रही?"

अब शिवानी को कहने का मौका मिल गया। उसने सीधे-सीधे कह दिया, "हां, नहीं जाती।"

"तो रोज-रोज कहां जाती हो?" मम्मी ने पूछा।

"जाकर पार्क में बैठ जाती हूं।" शिवानी ने जवाब दिया।

"लेकिन क्यों?" मम्मी ने पूछा।

शिवानी रो पड़ी। रोते-रोते ही उसने सर की बदतमीजी के बारे में बता दिया। मम्मी ने उसे सीने से लगा लिया और कहा, "तुमने मुझे क्यों नहीं बताया बेटा?"

"मुझे लगा, आप यकीन नहीं करेंगी। उलटे मुझे ही दोष देंगी।"

"नहीं, मेरे बच्चे! तुम्हें उसी दिन बताना चाहिए था। अच्छा, आने दो पापा को। सर का इलाज तो कुछ करना ही होगा!"

पापा शाम को घर लौटे। मम्मी से बात सुनकर वह आपे से बाहर हो गए। उन्होंने उसी समय सर को फोन लगाया। खूब डांट लगाते हुए कहा, "जेल जाने को तैयार हो जाओ!"

सर फोन पर गिड़गिड़ाते रहे, माफी मांगते रहे, लेकिन पापा जरा भी नहीं पसीजे, "तुम्हें सजा दिलवाकर रहूंगा।" कहकर उन्होंने फोन काट दिया।

पापा-मम्मी का सपोर्ट पाकर शिवानी का आत्मविश्वास लौटने लगा। उसे लगा, 'मैंने बेकार ही इतने दिन लगा दिए। मुझे तुरंत यह बात मम्मी को बतानी चाहिए थी।'

शिवानी भागकर पापा के गले लग गई। ❀

अपने लेखक को जानिए

संजीव ठाकुर : हिन्दी साहित्य में पीएचडी। कुछ वर्ष अध्यापन। इन दिनों स्वतंत्र लेखन। हिन्दी की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में कविता, कहानी, समीक्षा, बालगीत, बालकथा आदि का प्रकाशन। अब तक बड़ों के लिए दस और बच्चों के लिए पंद्रह किताबें प्रकाशित।

'कबूतरी आंटी', 'बड़ों का बचपन', 'बचपन की बातें' बाल साहित्य की चर्चित किताबें।

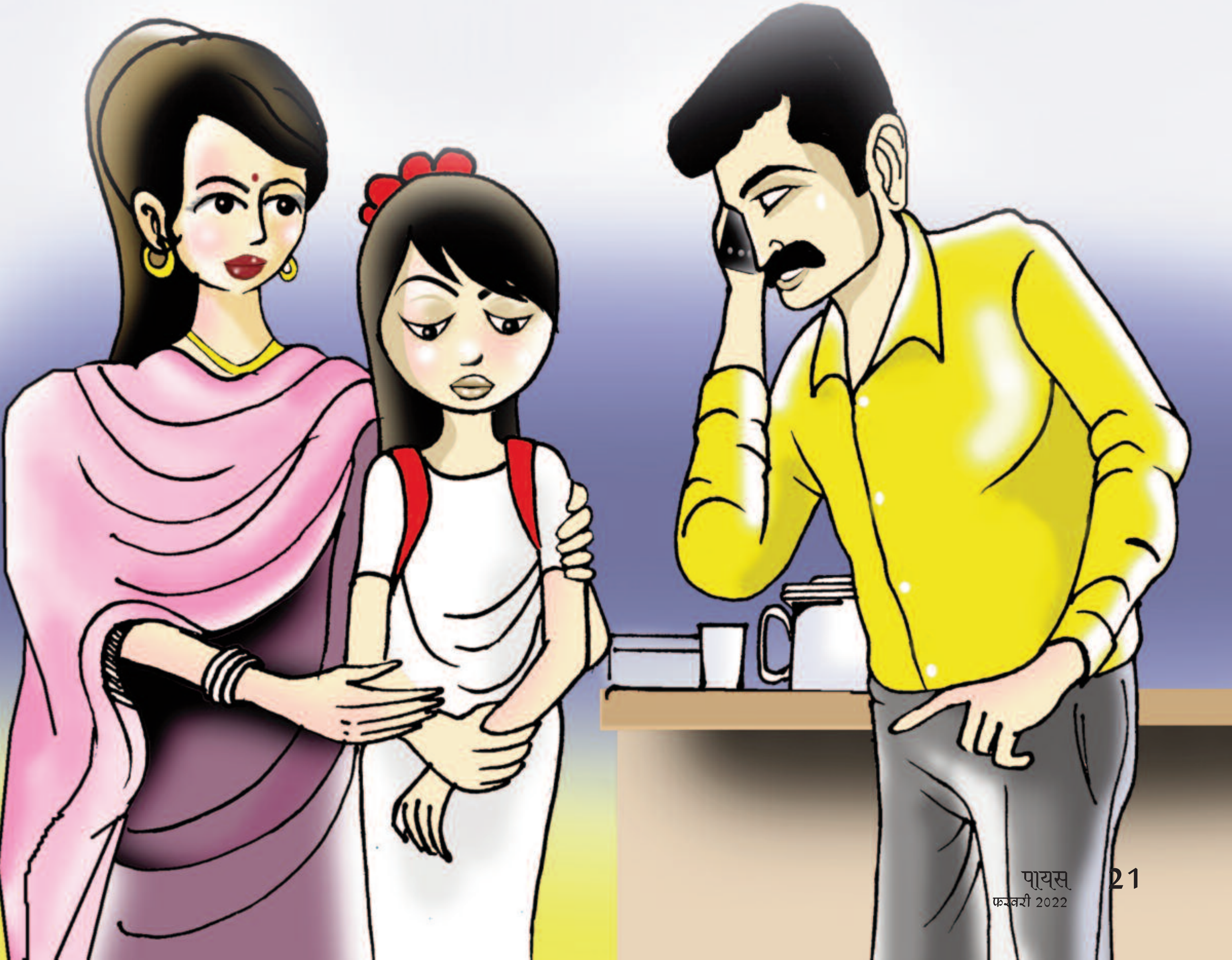

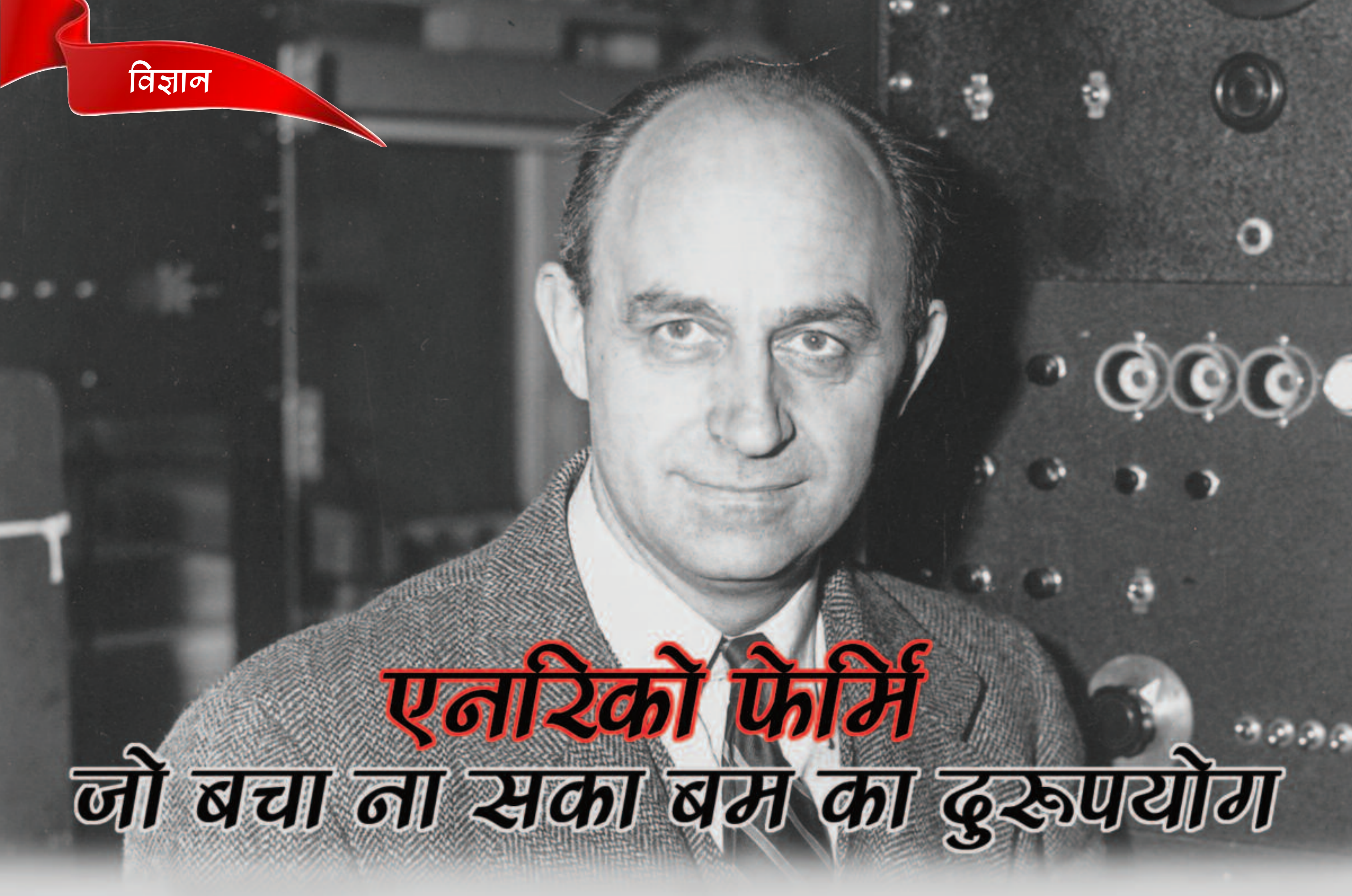

एनरिको फेर्मि
जो बचा ना सका बम का दुरूपयोग

उसने कायनात के सबसे मासूम और छोटे कण की ताकत का जान लिया था, वह चाहता था कि इस असीम शक्ति का इस्तेमाल मानवता की भलाई में हो; इसके लिए उसने देश छोड़ा, घर-बार छोड़ा लेकिन बम तो विध्वंस के लिए ही होता है। बस! हाथ बदले, अणु शक्ति का दुरूपयोग नहीं बदला।

29 सितंबर 1901 को रोम में जन्मे एनरिको फेर्मि जब स्कूल में थे, तब उनकी रूचि गणित विषय में अधिक थी। फेर्मि के बचपन का सबसे अच्छा दोस्त उनका बड़ा भाई था। वे दोनों साथ-साथ बिजली की मोटरें व मशीनें बनाते। दोनों ने कई किताबें खंगालीं और हवाई जहाज के नक्शे व मॉडल भी तैयार किए। दुर्भाग्य से सन 1915 में फेर्मि के भाई ग्यूलियों की मौत हो गई । 16 साल के फेर्मि के लिए यह बहुत बड़ा सदमा था। लेकिन उसने अब किताबों को अपना साथी बना लिया। 19 साल की आयु में उन्हें 'स्कूलो नार्मले सुपरिएरे' फेलोषिप मिली। फेर्मि ने चार साल पीसा विश्वविद्यालय में बिताए और 1922 में भौतिकी में डाक्टरेट की डिगरी हासिल की। 1927 में उन्हें पीसा यूनिवर्सिटी में भौतिकी के प्रोफेसर का पद मिला और वे इस पर सन 1838 तक रहे। सन 1928 में प्रोफेसर फेर्मि का विवाह लोरा केपान से हुआ। इनके एक बेटी नेल्ला व एक बेटा ग्लूडो हुआ।

आने वाले सालों में फेर्मि ने सांख्यिकी के एक महत्वपूर्ण सिद्धांत की खोज की, जो आज भी "फेर्मि स्टेटिस्टीक" के नाम से माहूर है। एक तरफ फेर्मि जैसे वैज्ञानिक मानवता के विकास के लिए नई-नई खोजों में लगे हुए थे तो दूसरी ओर हिटलर ने यहूदियों के सफाए की मुहिम चला रखी थी। 1934 में क्यरी और जोलिअट द्वारा रेडियो एक्टिव विकिरण कर अणु-शक्ति की दुनिया का नया अध्याय खुल चुका था। ठीक इसी समय फेर्मि ने 'बीटा-क्षरण सिद्धांत' का प्रतिपादन कर सबसे छोटे कण की ताकत के इस्तेमाल का मार्ग प्रशस्त कर दिया था। अब पूरी दुनिया पर अपनी सत्ता कायम करने के लिए जर्मनी परमाणु बम की संभावनाओं पर काम कर रहा था। उधर रोम में मुसोलीन का फासीवाद भी चरम पर था। फेर्मि का अपने ही देश में दम घुट रहा था। एक सार्वजनिक आयोजन में फेर्मि ने खुलकर कहा, "विज्ञान की उन्नति के लिए हर तरह की स्वतंत्रता चाहिए, किसी तरह की पांबदी नहीं।" फासी-सत्ता को इस तरह के बयान कहां सहन होते? वे दिन इस महान वैज्ञानिक के घुटन के थे।

फेर्मि ने परमाणु आंतरिक संरचना, नाभिकीय अभिक्रियाओं और न्यूट्रान की बौछारों से एक तत्व को दूसरे में परिवर्तित करने का महत्वपूर्ण काम किया । इस खोज

पर उन्हें 1938 में नोबेल पुरस्कार मिला। नोबेल सम्मान लेने के नाम पर उन्होंने देश से बाहर जाने की अनुमति ली और सपरिवार रोम से बाहर आ गए। बाद में वे अमेरिका में बस गए। सन 1938 से 1942 तक वे कोलंबिया यूनिवर्सिटी में भौतिकी के प्रोफेसर रहे। वे परमाणु बम बनाने की पहली मेनहट्टन परियोजना के प्रमुख बनाए गए। तभी उन्होंने अल्बर्ट आइन्स्टीन को बताया कि किस तरह युद्ध पर आमादा जर्मनी अणु बम बनाने की कोशिशें कर रहा है। आइन्स्टीन ने इसकी जानकारी अमेरिका के राष्ट्रपति रूजवेल्ट को दी। इधर फेर्मि परमाणु की ताकत की चरम ताकत के इस्तेमाल की विधि को जान चुके थे। 02 दिसंबर 1942 को शिकागो यूनिवर्सिटी में परमाणु की नियंत्रित शृंखला का परीक्षण किया गया और इस तरह अमेरिका ने परमाणु बम बना लिया।

यह दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि विश्व शांति के लिए अपना दश छोड़ने वाले वैज्ञानिक की महानतम खोज का दुरूपयोग 16 अगस्त 1946 को जापान के हिरोशिमा और इसके तीन दिन बाद नागासाकी पर किया गया। शायद दूसरे विश्व युद्ध का अंत इसी तरह होना था।

घूमने, पहाड़ों पर चढ़ने के शौकीन फेर्मि इस दुरूपयोग से बेहद दुखी थे। वह परमाणु शक्ति का प्रयोग शांतिपूर्ण कार्यों में करने के हिमायती थे। 28 नवंबर 1954 में शिकागो में उनका देहांत हो गया। ❁

अपने लेखक को जानिए

पंकज चतुर्वेदी : आरंभ में पत्रकार, फिर अध्यापन। 'राष्ट्रीय पुस्तक न्यास' (एनबीटी) में बच्चों की किताबों के संपादक हैं। रोजाना किसी न किसी अखबार में कॉलम लिखते हैं। कहानीकार तो अच्छे हैं ही, एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में भी अनुकरणीय। पंकज ने कोरोना संकट में लोगों तक सहायता पहुंचाने के लिए खूब काम किया

अपने लेखक को जानिए

सतीश उपाध्याय : : नवसाक्षर साहित्य माला ऋचा प्रकाशन दिल्ली द्वारा एवं नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा दो पुस्तकों का प्रकाशन। लगभग 30 वर्षों से लेखन। आदि गुरु शंकराचार्य सम्मान से विभूषित। बाल साहित्य की कहानी, कविता, गीत, गजल, नाटक, जीवनी, यात्रा वृत्तांत, पहेली विधा में श्रेष्ठ कार्य।

सूनी मंडी राम दुहाई

हरी-भरी ताजी कोमल-सी,
भिंडी जी ने सभा बुलाई।
कद्दू ,टिंडा झटपट पहुंचे,
फिर लौकी पीछे से आई।

डोडका और करेला आया,
आई फिर भाजी चौराई।
शिमला वाली मिर्ची आई,
आकर फूली नहीं समाई।

मूली खीरा गाजर नींबू ,
संग-संग में पड़े दिखाई।
साथ देख कर ककड़ी चीखी,
रुक जा-रुक जा मेरे भाई।

और खुरदुरा कटहल आया,
गोभी-फुलवा भी तो आई ।
मटरू छुपा-छुपा-सा आया,
लेकर अपनी हरी रजाई ।

कुंदरू घुंघरू बांधे आया,
अदरक नाचे छप्पक-छाई।
ले लहसुन को बैंगन थिरका,
सेमी ने फूंकी शहनाई।

बथुआ जी की बड़ी लाड़ली,
पालक भाजी भी मुस्काई ।
इधर सभा में ता-ता थैया ,
सूनी मंडी राम दुहाई ।

सर्दी दूर भगाने को

ठंड हवा के झोंके भी ।
रुकते नहीं है रोके भी ।
किट किट, किट किट कंपा रहे।
नाम प्रभु का जपा रहे ।

आज नहीं मन गाने को ।
बस प्रयास है आज हमारा ,
सर्दी दूर भगाने को।

मां ने आग जलाई है ।
तन पर पड़ी रजाई है ।
चाय, पकौड़ी, मूंगफली।
लगती खिचड़ी आज भली।

और नहीं कुछ पाने को ।
मिल जाए बस सिगड़ी हमको,
सर्दी दूर भगाने को।

अब तो ओस डराती है।
धूप बदन को भाती है।
ठंडा कुछ ना भाता है।
पानी नहीं सुहाता है।

अब न कहो नहाने को ।
दुबके रहने दो खटिया में,
सर्दी दूर भगाने को।

अंजीव अंजुम

आगे वाली बतख

सलोनी और भाविक शुरू से ही एक साथ एक ही कक्षा में पढ़ते आए थे। अब दोनों छठी कक्षा में पहुंचे थे। दोनों ही पढ़ाई में बहुत होशियार थे। कभी सलोनी प्रथम स्थान पर रहती तो कभी भाविक।

इस बार भाविक प्रथम आया, तो उसके मन में आस जगी कि इस बार उसे ही कक्षा का मॉनिटर बनाया जाएगा। परंतु आशा के विपरीत नई कक्षा इंचार्ज मिस सुनंदा ने भी सलोनी को फिर से मॉनिटर बना दिया। इस बार उसे 'इको चैम्प' बना दिया। वह मन ही मन कहने लगा, 'करते रहो बस पेड़-पौधों का ख्याल या फिर स्वच्छता का ध्यान।'

पिछली बार उसे 'ब्लैकबोर्ड चैम्प' बनाया था, बस लगा रहा पूरे 6 महीने ब्लैक बोर्ड साफ करने में। मुझसे अच्छा तो मयूर है जिसे 'लाइन चैम्प' बनाया है। लाइन ठीक करने के लिए उन पर डांट तो मार सकता है... अपना रोब तो दिखा सकता है। और तो और, मुझसे अच्छा तो वह नालायक शौर्य ही है, जिसे 'लंच चैम्प' बनाया है। वह सब के लंच बॉक्स चेक करने के चक्कर में उनका मनपसंद स्वादिष्ट भोजन चट कर सकता है। पर जो बात मॉनिटर बनने में है वह बात इन 'चैम्प्स' बनने में कहां है। मैं यह जानता हूं कि सलोनी बहुत अच्छी है पर मैं भी तो अच्छा हूं।'

इस बात को लेकर भाविक मन ही मन में दुखी रहने लगा। घर में उसके दादाजी ने उसे उदास देखकर कारण जानना चाहा परंतु वह टाल गया।

भाविक ने मन में निश्चय किया कि इस बार जब 6 महीने के बाद मॉनिटर बदलने की बारी आएगी, तो वही मॉनिटर बनेगा। उसने योजनाबद्ध तरीके से सभी बच्चों के साथ दोस्ती गांठनी शुरू कर दी। वह उनकी झूठमूठ की प्रशंसा करने लगा। उनकी हर संभव मदद करने की कोशिश करता। जैसे-जैसे नए मॉनिटर बनाने के दिन नजदीक आते जा रहे थे, तो वह बच्चों को खुश रखने का प्रयास करने लगा। उसने सभी बच्चों को मॉनिटर बनाए जाने पर चॉकलेट और सुंदर सा उपहार

चित्र : भुपेन मंडल

देने का वादा भी किया। उसने सब बच्चों को समझाया, तुम सब एक स्वर में मिलकर कहना इस बार भाविक को हमारा मॉनिटर बनाओ मैम!

सचमुच इस बार सब बच्चों ने एक ही स्वर में भाविक का नाम अनुमोदित किया। मिस सुनंदा ने भाविक को मॉनिटर बना दिया। घर आकर उसने दादा जी को बताया तो वह उसे खुश देखकर बहुत खुश हुए और इस नई जिम्मेदारी को संयम से निभाने के लिए कहा।

कुछ दिन तो भाविक सबके साथ मित्रवत रहा परंतु समय बीतने के साथ उसका मूल स्वभाव उस पर हावी होने लगा। वह अपने सहपाठियों पर अनावश्यक रूप से रोब झाड़ने लगा। अध्यापक की अनुपस्थिति में वह कक्षा में अनुशासन बनाए रखने के चक्कर में एकाध बच्चे को थप्पड़ भी जड़ देता था। किसी पर बिना बात चिल्ला पड़ता। किसी बच्चे की उसे कोई चीज अच्छी लगती, तो वह जबरन उसे ले लेता, चाहे फिर वह मामूली पर ही क्यों न हो।

लंच टाइम में भी वह कभी-कभी किसी का पूरा भोजन चट कर जाता। एक बार तो सहपाठी के साथ लड़ाई होने पर उसने उसका लंचबॉक्स फर्श पर दे मारा। सभी भाविक से अब परेशान रहने लगे, पर सोचते कि अब वे किस मुंह से मैम से उसकी शिकायत करें, हम सबने ही तो उसे स्वयं चुना था।

इसी बीच सभी बच्चों को स्कूल की तरफ से पिकनिक के लिए ले जाया गया। छठी कक्षा के मॉनिटर भाविक को उनके कक्षा के 10 बच्चों की जिम्मेदारी सौंपी गई कि वह बस में उतरते और चढ़ते समय तथा पिकनिक के दौरान उनका पूरा ध्यान रखे।

पिकनिक से वापस बस में चढ़ते समय बच्चों की गिनती करने पर छठी कक्षा का एक बच्चा गायब था। भाविक से पूछने पर उसने खरा जवाब दिया, "मुझे नहीं मालूम।"

टीचर मैम को भाविक का यह लापरवाही भरा उत्तर अच्छा नहीं लगा। वे चिंतित हो उठीं। उधर सलोनी तुरंत पार्क की तरफ यह कहकर भागी कि मुझे पता है, निक्कू कहां होगा? कुछ देर बाद निक्कू को सलोनी के साथ सुरक्षित वापस आते देख सभी की जान में जान आई।

नेतृत्व का उद्देश्य है सबको साथ लेकर चलना, रोब झाड़ना नहीं होता। सभी बच्चे एक साथ चिल्ला उठे, "मैम! हमें मॉनिटर के रूप में भाविक नहीं चाहिए। सलोनी ही हमारी सच्ची हमदर्द व दोस्त है।"

यह सुनकर भाविक क्रोधित नजरों से सबको घूरने लगा। फैसला हो चुका था। भाविक अपना सा मुंह लेकर रह गया।

घर पर उसकी रोनी सूरत देखकर उसके दादाजी चिंतित हुए। उन्होंने उसे दुलराते हुए पूछा तो वह फूट पड़ा, "मुझे हटाकर फिर से सलोनी को मॉनिटर बना दिया गया।" उसने सारी बात दादाजी को बताई। उन्होंने उसे प्यार किया और उस समय कुछ भी न कहा।

अगले दिन रविवार होने के कारण वह दादा जी के साथ सुबह की सैर को गया। तालाब के किनारे बतखों को एक साथ कतार में एक के पीछे एक को चलते देखकर उनके दिमाग में कुछ सूझा। वह मन ही मन बोले, 'भाविक को समझाने का यह उचित अवसर है।' उन्होंने भाविक का ध्यान उन बतखों की ओर दिलाया।

"देखो तो जरा, ये बतखें कतार में चलती हुई कितनी अच्छी लग रही हैं। इन सब के आगे जो चल रही है, वह है इनकी मॉनिटर। जरा गौर से देखो वह चलते हुए बीच-बीच में पीछे मुड़ कर देख रही है कि कहीं कोई बतख पीछे तो नहीं रह गई। इनकी लीडर होने के नाते यह उसकी जिम्मेदारी है। इन पीछे चल रही बतखों को अपनी अपनी लीडर पर पूरा विश्वास है। देखो अब वह रुक कर इन्हें सावधानी से पानी का खड्डा पार करवा रही है। समझे कुछ!"

"हां दादा जी! मैं आपका इशारा समझ गया। मुझे मॉनिटर होने के नाते निक्कू का ध्यान रखना चाहिए था और बाकी बच्चों के साथ प्रेम पूर्वक मित्रवत रहना चाहिए था।"

"एक बात कहूं दादाजी! सलोनी सचमुच इस आगे चलने वाली बतख जैसी ही है।"

दादाजी ने प्यार से भाविक को चपत लगाई। ❀

अपने लेखक को जानिए

डॉ. शील कौशिक : एमएससी, एलएलबी, एम.एच.एम (होम्योपैथी)। प्रकाशित पुस्तकें : 30 (मौलिक : 21, सम्पादित : 5, अनुवादित : 3, लेखिका पर पुस्तक-1)। कुछ के नाम : बचपन के आईने से, धूप का जादू, करें तो क्या करें, माशी की जीत, बालकविता-संग्रह : बिल्लो रानी।

एक मिनट

अपने लेखक को जानिए

डॉ. फ़हीम अहमद : रुदौली, फैजाबाद में जन्म। डिग्री कालेज में हिंदी शिक्षक। बाल काव्य में विशेष रुचि। 26 वर्षों से पत्र- पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन। दो पुस्तकें प्रकाशित। अनेक संस्थाओं से सम्मानित।

देर नहीं होगी अब बिल्कुल
एक मिनट रुक जाओ बस।

आता हूँ जी, ज़रा नहा लूँ,
कपड़े जूते हैं तैयार।
नाश्ता मुझको करना है बस,
देखो तुम मेरी रफ्तार।

चल दूँगा मैं साथ तुम्हारे,
गिनती गिनो एक से दस।

जल्दी-जल्दी काम करूँ मैं,
फिर भी हो जाती है देर।
रह जाते कुछ काम अधूरे,
फिर कामों का लगता ढेर।।

जल्दबाज हूँ, नहीं निकम्मा,
ऐ भाई, ना मुझ पर हँस।

होमवर्क करना मैं भूला,
टीचर जी होंगे नाराज।
गमलों में पानी देना भी,
याद नही रख पाया आज।।

रुको,काम सारे निपटा लूँ,
हूँ आदत से मैं बेबस।

नया पेड़

एक जंगल वीरान हो चला था। एक बार पक्षियों का एक बड़ा दल वहां आ पहुंचा। पक्षियों ने बहुत ढूंढ़ा पर उन्हें कोई हरा-भरा पेड़ रहने को न मिला।

आखिर में उन्होंने एक सूखे पेड़ को ही अपना बसेरा बना लिया। वे रात में उसमें पत्तों की तरह लटक जाते। पर मुश्किल यह थी कि सूरज उगने के पहले ही उन्हें जाग जाना होता। और तो और, उन्हें ठंड और गरमी भी खूब लगती। बारिश से भी उनका बचाव न हो पाता।

उन्होंने दोबारा मिलकर सोचा। वे जंगल के बचे-खुचे पेड़ों से अपनी-अपनी पसंद का पत्ता ले आए और उन्हें पेड़ पर रोप दिया। अब आम, नीम, पीपल, बरगद, बबूल जैसे पत्तों की उनकी शानदार हवेली तैयार थी।

समय बीता गया। उस पेड़ पर तरह-तरह के फूल और फिर फल आने लगे। वे मजे से उन तरह-तरह के फलों को खाते और एक-दूसरे को भी खिलाते।

कुछ दिनों बाद वह पेड़ बूढ़ा होने लगा। उसने सोचा, अपने जैसा ही एक और पेड़ बनाऊं। पर कौन सा? आम, नीम, पीपल, बरगद, बबूल या कोई और? पेड़ के साथ सब पक्षी भी सोचने लगे। सोचते गए...सोचते गए। आखिर में उन्हें एक उपाय सूझा। सब ने मिलकर एक खूब बड़े फल में अपने-अपने फल का रस डाल दिया। पेड़ ने जल्दी ही उस नए फल के बीज से पहले एक पौधा और फिर पेड़ तैयार कर दिया। उस पेड़ में पहले सतरंगे पत्ते आए। फिर खूब खुशबू और स्वाद वाले रस भरे चमकीले फल! जल्दी ही पक्षियों ने पुराना पेड़ छोड़कर नए पेड़ को अपना बसेरा बना लिया।

पर एक समस्या वहीं की वहीं है। अब तक न तो नए पेड़ का कोई नाम है न उन फलों का।

तुम्हारे दिमाग में कोई नाम आए तो जरूर सुझाना। ❁

रचनाकार को जानिए

डॉ. अनुपमा गुप्ता : पेशे से डॉक्टर। बाल रचनाओं के लिए प्रेरणा बच्चों से ही लेती हैं। अपने चारों और बिखरी प्रकृति, इंसानों और जानवरों से भी प्रेरणा पाकर कविताएं लिखना बहुत भाता है।

ईल्ली और नानी (उपन्यास) धारावाहिक के रूप में

एक थी नन्ही मक्खी

एक थी नन्ही मक्खी, नाम था ईल्ली। उसकी मां कीटाणुओं की व्यापारिन थी। उसके पास कई ट्रक थे, जिनमें लादकर वह कीटाणुओं को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाया करती। बाजार में कभी पेचिश के कीटाणु की मांग होती, तो कभी हैजा के कीटाणु की, मौसम बदलते ही कीटाणुओं की मांग बदल जाया करती थी।

ऐसे ही एक दिन ईल्ली की मां कीटाणुओं के ट्रक लादकर व्यापार करने गई। पीछे से ईल्ली को नानी का तार मिला।

"फटाफट चली आओ, यहां बहुत वर्षा हुई है। गड्ढ़े-पोखर पानी से भरे हुए हैं। काफी कीटाणु बिकने की संभावना है। डाईरिया के कीटाणु अधिक लाना।"

'ओइ! मां तो अभी तक लौटी नहीं, अब उनकी जगह मुझे ही जाना होगा। अच्छे बच्चों की तरह मुझे बड़ों के काम में हाथ बटांना चाहिए।' यह सोच नन्ही ईल्ली ने ट्रक लादने शुरू किए। तरह-तरह के कीटाणुओं को लेकर वह चल पड़ी सौरपुर शहर की ओर।

रास्ते में कीटाणुओं से भरे ट्रक देखकर दवा ने हमला कर दिया।

चारों ओर से घेरकर दवा अपने गोली-केप्सूल दागने लगी। हमले में काफी कीटाणु मारे गए। ईल्ली स्वयं भी किसी तरह बचती-बचाती रास्ते की कठिनाईयों को पार करती हुई नानी के घर पहुंची।

नानी ईल्ली से और ईल्ली नानी से मिलकर बहुत खुश हुई। नानी ने ईल्ली को गले लगाया। उन्होंने एक-दूसरे के हालचाल पूछे व धूप भी सेंकी और अपने पंख भी झाड़े।

उनके बीच नए कीटाणु की चर्चा भी चली। नानी ने ईल्ली से कहा, "आज से हम कीटाणु पहुंचाने का काम शुरू करेंगी। इससे पहले मैं चाहती हूं कि तुम घूमकर पूरे क्षेत्र का मुआयना कर लो क्योंकि अभी तुम एक बच्ची मक्खी हो। व्यापार की तकनीक से अपरिचित हो। अतः साथ रहकर मैं तुम्हें इस कला की बारीकियां समझाऊंगी।"

"कहने को तो यह सौरपुर शहर है, यहां की नगरपालिका खूंखार है किंतु डरने की कोई बात नहीं मैं तुम्हारे साथ रहूंगी।" इतना कहकर नानी ने उड़ान भरी। साथ में ईल्ली ने भी उड़ान भरी।

उन्होंने उन तमाम जगहों को देखना शुरू किया, जहां-जहां उनके माल अर्थात कीटाणुओं को अधिक मात्रा में बेचा जा सकता था।

"यह देखो ईल्ली, मिठाई की दुकानें।"

"हां मैं देख रही हूं नानी। मुझे मीठा बहुत पसंद है।"

ईल्ली की भोली शक्ल और

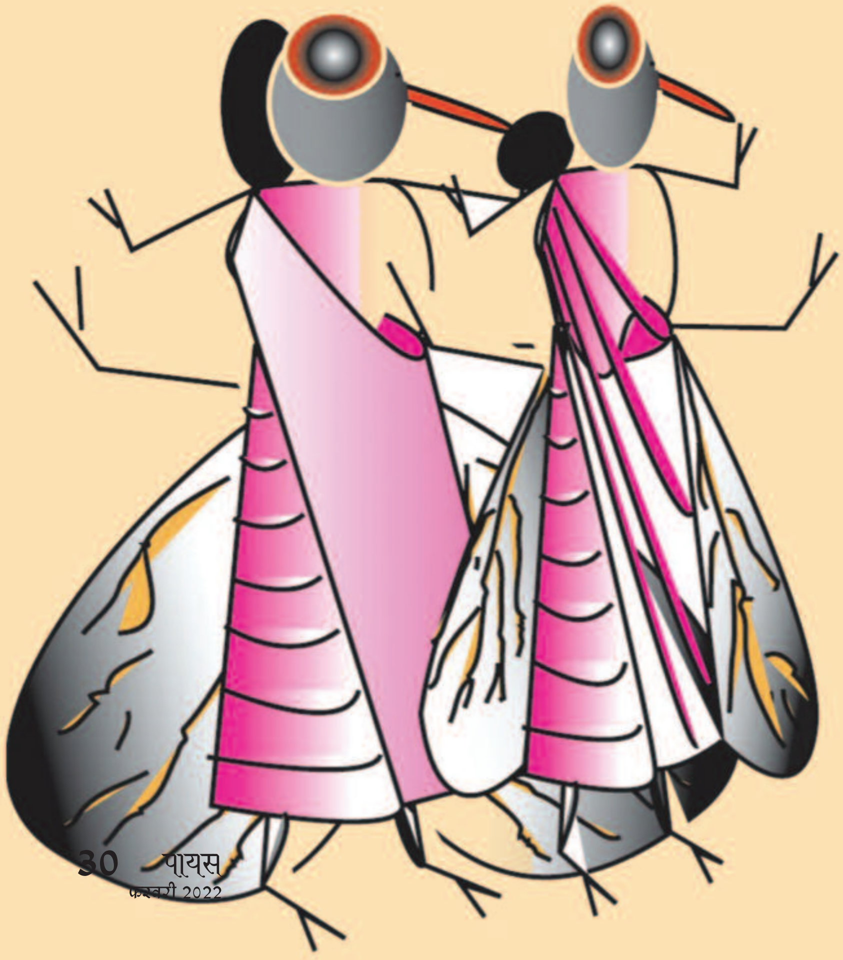

मासूम जवाब सुन नानी मुसकराई, “यहां कीटाणु खपत की काफी संभावना है। यह देखो ईल्ली, रेलवे प्लेटफार्म, बस स्टैंड और इनसे लगी दुकानें। यह शहर की अच्छी जगह है जहां भीड़-भाड़ रहती है।”

“यह कहां आ गए हम?” अचानक ईल्ली ने पूछा।

“हम अस्पताल आए हैं।”

“बाप रे! अस्पताल, चलो भागो।”

“नहीं-नहीं, डरो मत ईल्ली। कहने को यह अस्पताल है, पर देख नहीं रही हो, इसके चारों ओर बिखरे मलबे का ढेर, बदबूदार शौचालय, यहां भी कीटाणु पहुंचाने की काफी गुंजाइश है। हां, कभी-कभी खतरा भी रहता है, परंतु जोखिम उठाना अपने धंधे का गुण है।”

“सो तो है नानी।” ईल्ली बोली और वे आगे उड़ चलीं।

“यह कौन सी जगह है नानी?”

“यह स्कूल है जहां बच्चे पढ़ते हैं। वैसे यहां कीटाणुओं की खपत की उम्मीद कम हैं, फिर भी मैंने अपने कई गुप्तचर यहां छोड़ रखे हैं। जब भी मौका मिला, तो हम हाथ से नहीं जाने देंगी।”

“वाह! बंदोबस्त तो बहुत अच्छा कर रखा है नानी आपने, परंतु यहां इतनी सफाई क्यों है?”

“क्योंकि यहां के बच्चे श्रमदान करते हैं। स्कूल साफ-सुथरा रखते हैं और रहते भी साफ सुथरे हैं।”

“फिर तो यहां कीटाणु पहुंचाने का काम बहुत मुश्किल है।”

कुछ देर नानी और इल्ली उड़ती रहीं, फिर एक जगह पहुंचीं।

“यहां कहां ले आई नानी!”

“ईल्ली, यह सौरपुर शहर के किनारे लगी कच्ची बस्ती है। अरे, यहीं तो वह खास जगह है।”

“खास जगह?”

“हां, देखो बारिश के कारण ही नहीं बल्कि नालियों के अभाव में घरों का गंदा पानी सब जगह बिखरा पड़ा है। पसंद आया, तुम्हें यह कीचड़?”

“पर नानी, यहां के लोग!”

“तुम चिंता मत करो। यहां के लोगों को मजदूरी से ही फुर्सत नहीं।”

“फिर भी नानी साफ-सुथरे तो रहते होंगे।”

नानी हंसी, “नहीं, ये कई दिनों तक नहाते नहीं। देख नहीं रही हो, इसके खुले फोड़े-फुंसी हमें खुला निमंत्रण दे रहे हैं। इच्छा हो रही हो, तो जरा बैठकर देख लो।”

कुछ देर दोनों वहां भिनभिनाती रहीं। थोड़ी देर बाद ईल्ली बोली, “नानी मेरा पेट भर गया है। चलो, अब आगे चलते हैं।”

“हां चलो।” और दोनों उड़ चलीं।

“अब हम कहां आ पहुंचे नानी?”

“यह शहर पर्यटन स्थल है बिटिया। दूर-दूर से सैलानी यहां घूमने आते हैं। यहां के लोगो को भी घूमने का बहुत शौक है। बाहर का खाना भी बहुत पसंद करते हैं। रविवार को तो यहां मेला लगा रहता है। वही समय रहता है, खास दिन हमारे व्यापार का। उस दिन ठेले वाले के हाथ जल्दी जल्दी चलते हैं। मुझे तो लगता है जैसे हाथ नहीं मशीन हो। सारी खाने की वस्तुऐं खुली रहती हैं। बस तभी हमें चुपके से अपना काम करना होता है। इतने कीटाणु बिक जाते हैं ईल्ली कि धंधा करने का मजा आ जाता है।” कहकर नानी रहस्यमयी हंसी।

“मेरा अनुमान है कि कच्ची बस्ती से अधिक माल यहां बिकेगा। टाईफाईड के कीटाणु तो यहां हाथों हाथ बिक जाएंगे।” ईल्ली बोली।

“तुम हो बड़ी समझदार निकली। चलो, वहां चलते हैं।” दोनों आगे बढ़ीं।

“यह वह जगह है ईल्ली, जहां झूठन का कचरा फेंका जाता है।”

“बाप रे बाप ये तो पूरा पहाड़ बन गया है।”

“और हां, इसकी बदबू में हमारे कीटाणु बड़े आसानी से खुश होकर रहेंगे। तपेदिक के कीटाणुओं को तो मजा आ जाएगा। तुम तो अपने सारे ट्रक खाली कर यहीं गोदाम बना लेना क्योंकि महीनों यह कचरा नहीं उठने वाला।”

(जारी...)

रचनाकार को जानिए

डॉ. विमला भंडारी : केंद्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से बाल साहित्य में पुरस्कृत, राजस्थान की जानी-पहचानी बाल साहित्यकार। अपनी साहित्यिक गतिविधियों के लिए ख्याति प्राप्त सलिला संस्था, सलूम्बर की वह संस्थापक अध्यक्ष हैं। अनेक आलेख व कहानियां विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

सोनी मम्मा और मुनमुन

कुमाऊं में सिटोली का पूरा जंगल आज बहुत खुश था। उसका कारण था कि कुक्कू पंछी के एक बच्चे को एक नन्ही चिड़िया फुटकी अपने चोंच में ला-लाकर भोजन खिला रही थीं। कुक्कू को पहाड़ के लोग कफुवा भी कहते हैं तथा फुटकी को वैज्ञानिक भाषा में ऐशी प्रीनिया कहते हैं।

पेड़ों पर खिले हुए पुष्प आनंदमग्न थे। वे कीटों को अपनी ओर आकर्षित कर लुभा रहे थे। उन पर भौंरे, तितलियां, मधुमक्खियां व अन्य कीट मंडराकर रसपान कर रहे थे।

कफुवा चिड़िया का नाम मम्मा था। उसने फुटकी के घोंसले में एक नन्हा सा अंडा दिया। फुटकी को प्यार से सभी सोनी कहते। वह सभी की हमेशा मदद करती रहती। इसलिए सभी उसे प्यार करते।

इसी अंडे से सुंदर से बच्चे का जन्म हुआ। जिसका नाम मम्मा और सोनी ने मुनमुन रखा। मुनमुन दोनों का स्नेह पाकर बहुत खुश थी। दोनों ही उसके लिए अच्छा-अच्छा मनपसंद भोजन लाकर खिलातीं।

आमतौर से कफुवा अपना घोंसला नहीं बनाती है, वह दूसरों के घोंसले में ही अपने अंडे देती है। मम्मा और सोनी की बहुत अच्छी दोस्ती थी।

मम्मा बहुत स्वच्छंद स्वभाव की थी। उसने घोंसला बनाकर घर नहीं बसाया। वह कभी इस डाल पर सो जाती, तो कभी उस डाल पर। जबकि सोनी ने उससे कहा, "प्यारी दोस्त, तुम एक घर बनाकर अपना घर बसा लो। उसमें आराम से रहना और अंडे दिया करना।"

लेकिन मम्मा ने आलस्य और प्रमाद के कारण कहा, "मैं घर बसाकर क्या करूंगी बहन? मैं तो स्वछंद, स्वतंत्र विचारों की हूं, मैं आजादी से घूमना-फिरना चाहती हूं। कौन घर बनाने का झंझट करे। मुझे घर बसाना बंधन लगता है। मेरे खानदान में तो किसी ने भी घर नहीं बसाया। घर बसाने से जिम्मेदारी बढ़ जाती है। तुम तो मेरी पक्की दोस्त हो। मैं तो तुम्हारे घोंसले में ही अंडे दे दिया करूंगी।"

जब सोनी ने यह सुना, तो बोली, "बहन तुम्हारी मर्जी। लेकिन एक बात जान लो कि आलस्य, प्रमाद और स्वछन्दता एक दिन अपनी जान के ही शत्रु बन जाते हैं।"

एक दिन आसमान में घोर घटाएं छाई हुई थीं। ऐसा लग रहा था कि तूफान आने वाला है, तेज बारिश और ओले गिरने वाले हैं। मम्मा तो पूरी तरह स्वच्छंद थी ही। वह अपने मन की मालिक थी। किसी की कुछ नहीं सुनती थी। मम्मा ने ठंडी-ठंडी हवा चलते देखी, तो वह आसमान की सैर करने चली गई। सोनी और मम्मा उसकी देखभाल करती रहतीं। मुनमुन और सोनी ने मना भी किया कि लग रहा है तेज बारिश और तूफान आनेवाला है। मत जाओ आसमान की सैर करने, लेकिन मम्मा नहीं मानी।

हुआ भी सच में ऐसा ही जैसा कि बिना सोच-समझकर कार्य करने वालों के साथ अक्सर होता है। मम्मा तेज हवाओं के साथ आसमान में मस्ती से उड़ रही थी कि तभी तेज तूफान आया और बारिश के साथ बादलों से बड़े-बड़े ओले गिरने लगे। मम्मा जब तक संभलती, तब तक तो एक ओला ऐसा गिरा कि उसने मम्मा को गहरी नींद में ही सुला दिया। पूरी रात झमाझम बारिश होती रही।

अगले दिन प्रातःकाल तक मम्मा नहीं लौटी जबकि मम्मा जब भी सैर करने जाती थी। वह शाम तक अपनी दोस्त सोनी के पास अवश्य लौटकर आ जाती थी।

मुनमुन ने पूछा, "प्यारी मौसी मेरी मां अभी तक लौटकर नहीं आई। सब ठीक तो है न।"

सोनी ने मुनमुन को प्यार करते हुए कहा, "बेटी मुनमुन, कल बहुत तेज तूफान आया था। खूब वर्षा और ओले गिरे थे। मैंने और तुमने तो मना किया था मम्मा से आसमान में सैर करने के लिए। लेकिन मम्मा नहीं मानी थी। लगता है कि वह अब कभी लौटकर नहीं आएगी। बस ईश्वर ही उसे बचा सकते हैं। जब तक वह लौटकर नहीं आती मैं ही तुम्हारी पूरी देखभाल और पालन पोषण करूंगी , जब तक तुम उड़ने लायक नहीं हो जातीं।"

यह सुनकर मुनमुन उदास हो गई और रोने लगी। सोनी ने उसे बहुत सांत्वना दी। उसे प्यार से सहलाया, दुलराया। पेड़ पर बैठे पंछी भी मुनमुन को सांत्वना देने लगे।

सोनी ने समझाया, "प्यारी मुनमुन, मैं तुम्हें अच्छी-अच्छी बातें सिखाऊंगी। शायद तुम्हें भूख लगी होगी। ईश्वर से प्रार्थना करते हैं तुम्हारी मां सकुशल लौटकर आ आए। मैं तुम्हारे लिए कुछ भोजन चुगकर लाती हूं।"

मुनमुन को सभी पंछी स्नेह दे रहे थे। सोनी मुनमुन को भोजन लाकर खिलाने लगी थी। पूरा जंगल यह देखकर अब बहुत खुश था।

अपने लेखक को जानिए

डॉ. राकेश चक्र : भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार से कई बार सम्मानित एवं पुरस्कृत। नौ दर्जन से अधिक मौलिक पुस्तकें प्रकाशित। छह दर्जन बाल साहित्य में गद्य और पद्य की मौलिक पुस्तकें।

कविता

वसंत आ गया

लो वसंत अब आ गया।
हर्षोल्लास छा गया।।

मतवाली हवा बहने लगी।
गीत कविता कहने लगी।
तरुवर नव परिधान पा गया,
लो वसंत अब आ गया।।

कलियों ने मुस्कान बिखेरी।
फूल रहे दिखलाय दिलेरी।
मदमस्त भौंरे को भा गया,
लो वसंत अब आ गया।।

धरती पर रौनकता छाई।
नीलगगन ने ली अंगड़ाई।
सब में उल्लास लुटा गया,
लो वसंत अब आ गया।।

रचनाकार को जानिए

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला' : व्याख्याता (अंग्रेजी), शासकीय उच्चतर मा.विद्यालय, घोटिया (छत्तीसगढ़), प्रकाशित पुस्तकें : तीन गद्य और तीन काव्य संग्रह।

रचनाकार को जानिए

डॉ. प्रीति प्रवीण खरे : दस पुस्तकें प्रकाशित। दूरदर्शन उद्घोषिका, लिटरेरी रिसोर्स पर्सन। शिक्षाप्रद शॉर्ट फिल्मों का निर्माण, प्रसारण। 14 नवंबर 2013 राष्ट्रपति भवन में आमंत्रण एवं चर्चा। मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी पुरस्कार-2017 प्राप्त।

बच्चों की टोली

बच्चे जब मिलते आपस में,
कली हृदय की खिलती।
उछलें-कूदें दिन भर तितली,
ज्यों फूलों से मिलती।।

साथ चलें तो ऐसा लगता,
जनम-जनम के साथी।
देख खिलौना भूलें सबको,
घोड़े, बंदर, हाथी।

आपस में खिचड़ी भी पकती,
दीन रूठ भी जाता।
पल भर में टॉफी के बदले,
ढेंचू-ढेंचू गाता।

कभी खेलते-खेल पुराने,
खो-खो,छुपन-छुपाई।

हार गए तो चिढ़कर रोते,
कहते माई-माई।

आओ मिलकर रेस लगाएँ,
रोहन झट से बोला।
जीवन में कुछ नाम कमाएँ।
जैसे अपना भोला।

मंजिल पर जो जल्दी पहुँचे,
उसे मिलेगी झप्पी।
धीरे-धीरे चलने वाला,
पीछे आता गप्पी।

खाए जो भी पौष्टिक भोजन,
स्फूर्ति उसे मिल जाए।
कसरत को अपनाएँ प्रतिदिन,
पदक तभी मिल पाए।

अपने लेखक को जानिए

उदय मेघवाल 'उदय' : जोधपुर से टेक्सटाईल में डिप्लोमा। साहित्य के प्रति स्वाभाविक रुचि है। अब तक कुछ रचनाएं प्रकाशित। गीत, गजल, बाल कविताओं में विशेष रुचि।

मुँह में पानी आया

बिल्ली मौसी इसी टोह में,
घूम रही आंगन में।
मिले कहीं से चूहा उसको,
सोच रही थी मन में।

आँगन में चुग रहे कबूतर,
गेहूँ के कुछ दाने।
बिल्ली ने जब देखा उनको,
चली कबूतर खाने।

धीरे-धीरे बिल्ली ने फिर,
अपना कदम बढ़ाया।
इतने सारे देख कबूतर,
मुँह में पानी आया।

दबे पाँव बिल्ली मौसी ज्यों,
पहुँची उनके आगे।
किंतु कबूतर चौकन्ने थे,
झट से उड़ कर भागे।

टॉमी और बंदर

दिन निकलने के साथ ही राजू या मन्नू में से कोई उसे छत पर छोड़ जाता। छत पर ही उसका खाने-पीने का मिटटी का बर्तन रखा रहता।

नाश्ता करने से पहले वह छत के चारों कोनों पर जाता, जोर-जोर से भौंककर अपनी उपस्थिति दर्ज कराता। बीच-बीच में वह पूरी छत पर घूमकर चक्कर भी लगा आता।

वह बहुत छोटा था, जब राजू और मन्नू उसे घर ले आए थे। नाम रखा गया टॉमी। राजू और मन्नू उसे खूब खिलाते-पिलाते। उसके साथ दिन भर खेलते। कभी-कभी उसे अपने साथ सुला भी लेते।

टॉमी जैसे-जैसे बड़ा हो रहा था उसकी शक्ल भी बदल रही थी। उसका शरीर, झब्बेदार पूंछ और चमकती हुई आंखें सबको लुभातीं।

घर में उसके उठने-बैठने और खाने-पीने की जगह निश्चित थी। अतः उसे मम्मी का अनुशासन मानना पड़ता, लेकिन जैसे ही दरवाजे पर कोई आहट होती, वह चौकन्ना हो जाता।

जब तक टॉमी छत पर रहता, आसपास के घर की छतों पर बंदर नहीं आते। कभी आ भी जाते, तो टॉमी इतनी जोर-जोर से भौंकता कि घर वाले समझ जाते कि आज छत पर बंदर आ गए हैं और वे डंडा लेकर उन्हें भगाने आ जाते।

एक बार की बात! बड़े बंदर टहलते-टहलते दूर निकल गए। दो-तीन छोटे-छोटे बंदर उनसे पीछे रह गए और बराबर वाली छत पर आकर उछल-कूद करने लगे।

टॉमी थोड़ी देर तो देखता रहा लेकिन जैसे ही वे उसकी छत की

तरफ बढ़े, उसने जोर-जोर से भौंकना शुरू कर दिया और उन्हें भगाकर ही दम लिया।

बंदर के बच्चों को यह बात बिल्कुल भी अच्छी नही लगी। वे चीखते हुए उधर की तरफ दौड़े, जिधर उनके 'बड़ों' ने डेरा जमा रखा था। बच्चों ने उनसे अपना सारा दर्द बयान कर दिया।

बंदरों को बहुत बुरा लग रहा था कि एक कुत्ते ने उनके बच्चों को डरा धमकाकर छत पर खेलने से रोक दिया!

बात गंभीर थी। एक कुत्ता वानर समाज को चुनौती दे रहा था। सबने गंभीरता से विचार करना शुरू किया। बहुत देर तक यह बंदर सभा चली। टोनी को सबक सिखाने के लिए एक निर्णय लिया गया।

निर्णय के अनुसार योजना बना ली गई। टॉमी छत पर कब अकेला होता है ? सुबह-शाम कब और किस वक्त वह घर से बाहर निकलता है ? बाहर निकलता है, तब उसके साथ कोई और भी होता है या यूं ही उसे अकेला बाहर छोड़ दिया जाता है ? जब अकेला छोड़ दिया जाता है, तो वह गली में ही रहता है या गली के बाहर सुनसान इलाके की तरफ भी वह जाता है ? इसकी बंदरों द्वारा जासूसी होने लगी।

रोजाना रात को सभी बंदर इकट्ठे होते। अपने बड़ों को रिपोर्ट करते। बड़े बंदर रोजाना की प्रगति की समीक्षा करते।

एक दिन अवसर मिल गया। टॉमी के साथ टहलाने कोई बच्चा आया तो था, लेकिन रास्ते में ही किसी दोस्त से बात करने लगा। टॉमी भी पट्टा छुड़ाकर तेजी से जमीन सूंघता हुआ गली के गेट से बाहर निकल गया। बंदरों के जासूस ने देखा और अपने इस मिशन के मुखिया को खबर दी। बंदरों का जमावड़ा भी आसपास ही था। आनन-फानन में समूह के सब सदस्यों के पास खबर पहुंच गई। सारे बंदर घेराबंदी करते हुए इस तरह आगे बढ़े कि टॉमी चारों ओर से घिर गया। वह चाहता, तो भी भागने की स्थिति में नहीं था।

बंदरों ने अपना घेरा छोटा करना शुरू किया। टॉमी सबके बीच में आ गया। उसने आंखें बंद कर लीं। बीच-बीच में थोड़ी सी आंख खोलकर देख लेता। फिर डर के मारे आंखें बंद कर लेता। सब बंदर इस इंतजार में थे कि मुखिया इशारा करे और वे टॉमी को सबक सिखाएं।

समुदाय का सबसे बड़ा बंदर, जो इस मिशन का मुखिया भी था, ने अपने चारों ओर निगाह दौड़ाई। स्थिति को अपने अनुकूल पाया। उसने एक बंदर की ओर इशारा किया। वह अपने स्थान से उठा और टॉमी के की पास पहुंचा। टॉमी ने धीरे से आंखें खोलीं। बंदर को पास खड़ा देखकर बुरी तरह सहम गया। तभी एक जोर का तमाचा उसके मुंह पर पड़ा। टॉमी कुछ करता भी तो क्या करता ? वह अकेला सबके बीच में घिर गया था।

बंदरों को भी ऐसे ही अवसर की तलाश थी। वे सब एक-एक कर अपनी जगह से उठते और टॉमी के मुंह पर जोर का तमाचा जड़ते और अपने स्थान पे आकर बैठ जाते।

जब सबकी बारी खत्म हो गई, तब सारे बंदर धीरे से उठे और टॉमी को झिंझोड़ते हुए आगे बढ़ गए, मानो कह रहे हों, 'बच्चू! आज तो इतने से ही छोड़ दिया है। आगे कोई हरकत की, तो समझ लेना क्या गति होगी।'

टॉमी सिकुड़ा-सहमा सा आंखें बंद किए, यथावत बैठा रहा। उसे पता ही नहीं चला कि बंदरों का समूह उससे बदला लेकर आगे जा चुका है। काफी देर तक जब शांति रही और कोई चांटा उसके मुंह पर नहीं पड़ा, तब धीरे से उसने आंख खोली। बंदर तो जा चुके थे। गली के लोग जरूर बंदरों की हरकत पर आश्चर्य करते हुए टॉमी की हालत देख रहे थे।

बंदरों के समूह के लिए यह उनके स्वाभिमान की रक्षा का मामला था। जिसका उन्होंने इस तरह बदला लिया था। वे चाहते, तो टॉमी को मार भी सकते थे। पर, उन्होंने ऐसा नहीं किया, सिर्फ सबक सिखाकर उसे छोड़ दिया था। टॉमी भी अपनी आंखें बंद किए बंदरों का वार झेलता रहा।

घटना के कुछ देर बाद टॉमी को उसके घरवाले घर लेकर आ गए। थोड़ी देर में मानो टॉमी सब कुछ भूल गया। वह रोजाना की तरह बच्चों के साथ खूब खेला।

अगले दिन टॉमी को रोज की तरह छत पर लाया गया। पहले उसने भौंकते हुए छत पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

अब पिछले दिन की घटना का उसे कुछ भी याद नहीं रह गया था। याद था, तो बस इतना कि जिन लोगों के बीच वह रहता है, खाता-पीता-खेलता है, उनके प्रति उसका कुछ कर्तव्य है, जिसे उसे पूरी मुस्तैदी के साथ निभाना है। ❀

रचनाकार को जानिए

सोमदत्त शर्मा : आकाशवाणी में उपनिदेशक रहे हैं। वरिष्ठ लेखक, कवि, नाटककार। देश की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। संप्रति : उपाध्यक्ष भारतीय शिक्षण मंडल, दिल्ली प्रांत और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य हैं ।

ऐल्लापेल्ली : भारत में देखो वेनिस

ऐल्लापेल्ली (अलापुज्जी) केरल का एक खूबसूरत, छोटा सा ग्रामीण जैसा शहर है। इस शहर के पास सब कुछ है, खूबसूरती, चारों तरफ फैली हरियाली, सीधे शांत लोग और सबसे बढ़िया समुद्र का किनारा और शहर के अंदर तक अठखेलियां करता हुआ समुद्र का पानी। तो आइए, चलिए आपको हम अलग दुनिया की सैर पर ले चलते हैं

हरा-भरे केरल की सबसे खूबसूरत बात यह है कि इसके एक किनारे हर जगह समुद्र है। हरियाली यहां के कण-कण में है। कोच्चि के पास ही बसा है हमारा सुंदर छोटा सा ऐल्लापेल्ली। इसकी खासियत यह है कि यहां समुद्र का किनारा तो है ही, पर नीचा स्थान होने के कारण शहर में भी समुद्र का पानी आया हुआ है, जो एक विशाल झील की तरह दिखता है। इसे बैक वॉटर कहते हैं। यह बैक वाटर या झील यहां के लोगों के लिए रोजी-रोटी भी है। इस बैक वॉटर में लोग टैक्सी की तरह नाव से एक जगह से दूसरी जगह जाते हैं। इसीलिए इसे भारत का

वेनिस कहा जाता है।

एक विवाह में शामिल होने के लिए मुझे ऐल्लापेल्ली जाने का मौका मिला। दिल्ली से जाने के लिए अगर हवाई यात्रा करनी हो तो कोच्चि तक जाना पड़ता है। फिर कोच्चि से ट्रेन, बस या निजी वाहन द्वारा ऐल्लापेल्ली पहुंच सकते हैं। ऐल्लापेल्ली रेल मार्ग द्वारा भी पूरे देश से जुड़ा हुआ है। ट्रेन के रूट को खंगाला, तो इसकी शानदार यात्रा को जेहन में रखते हुए मैंने ट्रेन से ही वहां जाना उचित समझा। हालांकि ट्रेन से जाने में काफी वक्त लगता है। पर मेरे पास वक्त की कमी नहीं थी और मैं खूबसूरती को निहारते हुए यात्रा करना चाहता था।

इस तरह ऐल्लापेल्ली तक की मेरी यात्रा दिल्ली के निजामुद्दीन स्टेशन से कोच्चि के पास स्थित एर्नाकुलम तक के लिए शुरू हुई। ट्रेन दिल्ली से केरल तक पहुंचने के रास्ते में करीब 8 राज्यों से गुजरती है। जब महाराष्ट्र में गाड़ी प्रवेश कर जाती है तो वहां से गोवा तक की यात्रा कभी ना भूलने वाली यात्रा होती है। गोवा से होते हुए कर्नाटक के बाद हमारा डेस्टिनेशन केरल का एर्नाकुलम शहर आया।

एर्नाकुलम से निजी गाड़ी द्वारा हम ऐल्लापेल्ली पहुंचे। यह समुद्र के किनारे बसा एक छोटा सा शहर है, जो अभी भी अपने गांव का रूप लिए हुए हैं। यहां देखने को वैसे बहुत बड़ी-बड़ी चीजें नहीं हैं, लेकिन प्राकृतिक दृश्य देखते हुए यहां आंखें नहीं थकतीं।

हम यहां के प्रसिद्ध लेक व्यू रिजॉर्ट्स में रुके। यह रिजॉर्ट्स समुद्र के बैक वाटर के साथ में बना हुआ है। यहां तक जाने के लिए उन्होंने स्टीमर का भी इंतजाम किया हुआ है, तो हम पानी के रास्ते इस टापू जैसे रिजॉर्ट्स पर पहुंचे।

अगले दिन हम समुद्र के बैक वाटर में नौका विहार के लिए निकले। यह बैक वाटर बोटिंग ऐल्लापेल्ली में सबसे अधिक प्रसिद्ध है। कई किलोमीटर तक फैले विशाल बैक वाटर लेक में छोटी नौकाओं से लेकर बड़े-बड़े जहाज खड़े रहते हैं। कश्मीर के डल लेक की तरह यहां

के नावों में आप रह सकते हैं। लोग पूरे दिन के लिए इनमें बुकिंग करके घूमते रहते हैं। हमने तो सिर्फ दो घंटे के लिए इसे बुक किया। करीब 2 घंटे में हमारा जहाज विभिन्न प्राकृतिक दृश्य को दिखाते हुए समुद्र के मुहाने तक पहुंचा। चारों तरफ के प्राकृतिक दृश्य, नारियल के पेड़, हरियाली और विभिन्न दृश्यों को देखकर हमारा मन नहीं कर रहा था कि वहां से हम वापस आएं। परंतु हर सपने का अंत होता है, तो हमारी यात्रा भी समाप्त हुई और भरे मन से हम वापस लौटे।

अगले दिन हमारा घूमने का कार्यक्रम था। पहले हम एक हथकरघा कारखाने में पहुंचे। वहां आज भी केरल के परंपरागत पहनावे को बुनकर हथकरघे पर बुनते हैं। वहां से खरीदारी भी कर सकते हैं

फिर हम कॉयर बोर्ड के कॉयर म्यूजियम पहुंचे। जहां नारियल के रेशों से विभिन्न प्रकार के सामान बनाए जाते हैं। और सबसे खास बात यह है कि यहां पर जिन्हें रुचि है, उनके लिए कोर्स भी कराया जाता है और अपना काम शुरू करने के लिए सरकार की तरफ से अनुदान भी दिया जाता है, ताकि एक लोक कला अस्तित्व में रहे।

वहां से हम केरल के कई प्रसिद्ध चर्चों में गए। यहां का अर्थानुकल बासीलिका चर्च बहुत शांत और भव्य है। हम जब चर्च पहुंचे, तो वहां के एक संत की याद में एक बड़ा कार्यक्रम हो रहा था। इतनी भीड़ होने पर भी कहीं किसी तरह की चीख-पुकार नहीं थी।

फिर हम वहां के प्रसिद्ध बीच पर पहुंचे। यह बीच सही मायने में कहा जाए, तो एक खतरनाक बीच था क्योंकि किनारा पर पानी जब आता, तो उसकी लहर लोगों के डगमगा देती और जब पानी वापस जाता, तो उसका वेग इतना होता था कि लगता था जैसे इंसान को अपने साथ बहा ले जाएगा।

शाम हो रही थी और वहां का सूर्यास्त का दृश्य बहुत भव्य था। करीब आधे घंटे तक हम वहां सूर्यास्त होते देखते रहे। सबसे कमाल की बाद थी कि गर्दन घुमाने पर हमारे पीछे उगता हुआ चांद भी दिखता था। यह कभी न भूलने वाली यात्रा रही। ❁

अपना-पराया

रचनाकार को जानिए

रोशनी राव : कक्षा 12, किसान इंटरमीडिएट कॉलेज मुडाडीहा, खुर्द बस्ती की छात्रा। लिखने, पढ़ने, खासकर कविता का बहुत शौक है। कहानी लिखने का यह प्रथम प्रयास है।

एक गांव में धनीराम नामक एक व्यक्ति रहता था। वह बहुत ही मतलबी था। उसकी पत्नी का नाम हीरावती था। उनका एक ही बेटा था राजू। उसकी उम्र लगभग दस वर्ष थी। धनीराम प्रतिदिन काम के सिलसिले में गांव से बाहर जाता था।

एक दिन राजू अपने दोस्तों के साथ गांव से बाहर एक पोखर के पास खेलने गया और खेलते-खेलते अपने दोस्तों से अलग हो गया। वह अकेला ही पोखर में नहाता रहा।

दोपहर का समय था। धनीराम उस दिन काम से जल्दी छुट्टी पाकर घर वापस आ रहा था। तभी उसे पोखरे में एक बालक डूबता हुआ दिखाई दिया। केवल उसके बाल दिखाई दे रहे थे। यह देखकर धनीराम ने अपने मन में सोचा, 'डूबने दो, मैं क्यों उसे बचाने में अपना समय खराब करूं। मुझे इससे क्या लेना।' ऐसा सोचकर धनीराम वहां से निकल गया।

धनीराम घर पहुंचा और खाना खाकर सो गया। दोपहर तक राजू नहीं लौटा, तो हीरावती को चिंता हुई। फिर उसने सोचा, 'कहीं खेलने गया होगा, लौट आएगा।'

दिन ढले तक भी राजू जब घर न लौटा, तो उसकी खोज शुरू हुई। पर राजू का कोई पता नहीं चला। अब हीरावती ने धनीराम को जाकर बात बताई। धनीराम ने गांव के कुछ लोगों को साथ लेकर गांव का हर कोना छान मारा, परंतु फिर भी राजू का कोई पता नहीं चला। तभी राजू के के दोस्तों ने आकर बताया कि अंतिम बार उन्होंने राजू को तालाब पर नहाते देखा था।

अब धनीराम सोचकर घबराया कि कहीं वह डूबता बालक राजू ही तो नहीं था। इतना सोचते ही धनीराम राजू-राजू चिल्लाते हुए पोखरे की ओर भागा। बाकी लोग भी उसके पीछे दौड़े।

पोखरे पर पहुंचकर लोगों ने पानी में ढूंढ़ा और एक बालक के शरीर को पानी से बाहर निकाला।

वह सच में धनीराम का बेटा राजू ही था। यह देखकर धनीराम जोर जोर से रोकर खुद को कोसने लगा, "काश, मैंने बिना यह सोचे कि वह पराया है, उस बच्चे को बचाने की कोशिश की होती, तो मेरा बच्चा राजू इस समय जीवित होता।"

गधे की इज्जत कीजिए

गधा 'एसिनस वर्ग' का पशु है। यह आकार में घोड़े से छोटा होता है, कान लंबे होते हैं, पूंछ का आकार और रंग भी घोड़े से भिन्न होता है। इन दोनों के वर्ग में जेब्रा भी आता है।

गधा लोक प्रचलन में मंद बुद्धि और हठीले जानवर के रूप में प्रचलित है, जबकि असलियत में यह इसके उलट है। वैदिक साहित्य में भी इसका उल्लेख मिलता है।

गधा से सीखो

गधा हमें बहुत कुछ सिखाता है, पर हम उसे उसके हिस्से की तारीफ नहीं देते। उदाहरण के लिए गधे को जिस कार्य में लगा दिया जाए, वह पूरी लगन से उसे करता जाता है। कभी ज्यादा चीख-पुकार नहीं मचाता। अकारण किसी पर हमला नहीं करता। गधे में सहनशक्ति भी बहुत ज्यादा होती है, जिसके चलते यह तंग जगह में भी परेशान न होकर ठीक से चल सकता है।

कब बना पालतू

मिस्र में एक शाही कब्रिस्तान की खुदाई करने पर एक दल को गधों के कंकाल मिले। इससे पहले मिस्र के किसी कब्रिस्तान में ऐसा कोई जानवर नहीं मिला था। काहिरा से 500 किलोमीटर दक्षिण में नील नदी के किनारे प्राचीन अबिदोस शहर के कब्रिस्तान में 10 गधों के कंकाल मिलना एक विचित्र बात थी। खुदाई में मिले गधों की हड्डियों में बारीक फ्रैक्चर पाए गए हैं, जो अत्यधिक बोझ ढोने का संकेत हैं। यह ढुलाई में गधों के इस्तेमाल का प्रमाण हैं। अर्थात पांच हजार साल पहले ही गधों को पालतू बना लिया गया था।

कैसे होते हैं गधे

गधे आमतौर पर दो प्रकार के होते हैं, जंगली और पालतू। जंगली गधे आमतौर पर ज्यादा ऊंचे और 250 किलोग्राम वजन तक के होते हैं।

पालतू गधे आकार में भिन्न होते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे कैसे पैदा हुए हैं। पालतू गधों की आठ अलग-अलग नस्लें हैं। औसतन, पालतू गधे अपने जंगली भाइयों की तुलना में थोड़े छोटे होते हैं, आमतौर पर उनका वजन 180 से 225 किलोग्रामका होता है।

गधे की सबसे छोटी नस्ल के गधे खुर से कंधे तक केवल 36 इंच (92 सेमी) तक बढ़ते हैं और उनका वजन 180 किलोग्राम से कम होता है। मैमथ स्टॉक, जो कि गधे की

सबसे बड़ी नस्ल है, खुर से कंधे तक 56 इंच (143 सेमी) तक बढ़ता है और इसका वजन 430 किलो तक होता है।

क्या खाते हैं

गधे आमतौर पर घास खाना पसंद करते हैं। हालांकि वे झाड़ियों और रेगिस्तानी पौधों को भी खाते हैं। गधों अपने दांतों से घास को पकड़ने के बजाय पौधे को अपने होठों से पकड़कर उसे अपने मुंह में खींच लेते हैं।

गधे खूब खाने वाले होते हैं। एक गधा प्रति वर्ष 2,700 किलोग्राम तक भोजन कर सकता है।

बच्चे का जन्म

एक गधी आम तौर पर लगभग 12 महीने में एक ही बच्चे को जन्म देती है। जुड़वा बच्चों का जन्म दुर्लभ होता है।

कितने गधे हैं

2006 में हुए अध्ययन के मुताबिक दुनिया भर में लगभग चार करोड़ गधे थे। चीन में सबसे अधिक एक करोड़ से ज्यादा गधे हैं, उसके बाद पाकिस्तान, इथियोपिया और मैक्सिको का नंबर है। हालांकि, 2017 तक, चीन में गधों के उत्पादों के बढ़ते व्यापार और मांग के कारण, इसकी आबादी घट गई है।

दुनिया के गधों में से, लगभग 90 प्रतिशत अविकसित देशों में हैं, जहां उनका उपयोग मुख्य रूप से श्रम के कार्यों के लिए किया जाता है। मानव श्रम के बाद, गधा कृषि शक्ति का सबसे सस्ता रूप है।

गधे आमतौर पर काटकर, आगे के खुरों से प्रहार करके या पिछले पैरों से लात मारकर अपना बचाव करते हैं।

गधों के खुर घोड़ों की तुलना में अधिक लोचदार होते हैं। उन्हें भी नाल पहनाने की आवश्यकता होती है। गधे के खुर यदि घिस जाएं, तो फिर ठीक नहीं हो पाते हैं।

ये भी जान लो

- गधा अपने लंबे कानों के कारण दूसरे गधे की आवाज 10 मील की दूरी से भी सुन लेता है।
- गधे की याद्दाश्त बहुत तेज होती है। जानकारों के मुताबिक गधा अपने साथी को 30 साल बाद भी पहचान सकता है।
- गधे को सबसे समझदार प्राणियों की श्रेणी में रखा जाता है। इसके बावजूद पूरी दुनिया में गधे को महामूर्ख समझती है।
- अब तक गधे का सबसे पुराना जीवाश्म अमेरिका के इडाहो से 3.5 मिलियन वर्ष पुराना मिला है।
- गधों के बड़े कान इसके खून को ठंडा रखने में मदद करते हैं।
- चित्रकूट में मुगल काल में गधा मेला की शुरूआत हुई थी। इसे औरंगजेब ने शुरू कराया था। यह अब भी लगता है।

भाग्य और लक्ष्मी

एक बार धन की देवी लक्ष्मी अपने भाई भाग्यदेवता के साथ हिमालय के सुरम्य पहाड़ों पर घूमने गईं। दोनों को कोई पहाड़ी व्यक्ति पहचान ना ले, इसलिए देवी लक्ष्मी ने एक धनी महिला और भाग्यदेवता ने एक मछुआरे का रूप धारण कर लिया। चलते-चलते अचानक दोनों में बहस छिड़ गई कि दोनों में से किस का अधिक महत्त्व है ?

"मैं जहां, जिस व्यक्ति के पास होती हूं, भाग्य भी वहां अपने-आप खींचा चला आता है।" देवी लक्ष्मी ने गर्वित भाव से कहा।

"नहीं मेरी बहन लक्ष्मी, धन तो तब ही किसी के हाथ लगता है, जब मैं यानी भाग्य उस व्यक्ति पर मेहरबान होता हूं।" भाग्यदेवता ने मुसकराते हुए लक्ष्मी से कहा।

इस तरह काफी देर तक बहस करने के बाद भी निर्णय नहीं हो पाया कि उन दोनों में से कौन श्रेष्ठ है। तभी उन्हें एक लड़का अपनी पीठ पर लकड़ियों का बोझ लादे जाता हुआ नजर आया।

"क्यों न हम इस लड़के को अपनी-अपनी तरह से धनी बनाकर देखें कि किसका धन उसके पास ठहरता है और किसका नहीं। जिस का धन इसके पास ठहरेगा, जीत उसी की मानी जाएगी।" लक्ष्मी ने भाग्यदेवता से कहा, तो वह भी उनकी बात से सहमत हो गए।

दोनों लड़के के पास पहुंचे। लड़के का नाम मोनू था। मोनू के पिता की काफी समय पहले मौत हो चुकी थी। घर में बीमार मां थीं, इसलिए घर चलाने के लिए मोनू जंगल से लकड़ियां काटकर शहर में बेचा करता था।

मोनू से देवी लक्ष्मी से कहा, "तुम ये लकड़ियां मुझे दे दो, बदले में मैं तुम्हें चांदी का सिक्का दूंगी।"

चांदी का सिक्का पाकर मोनू ने सारी लकड़ियां देवी लक्ष्मी को सौंप दी और खुशी-खुशी घर की तरफ चल पड़ा।

उस दिन गरमी ज्यादा थी। मोनू को नदी में नहाने की इच्छा हुई। मोनू नदी में जैसे ही नहाने के लिए घुसा, उसकी जेब में रखा चांदी का सिक्का पानी में बहता हुआ गायब हो गया।

दिव्य दृष्टि से यह सारा तमाशा देख रहे भाग्यदेवता जोर से हंस पड़े ।

चित्र : नीतू खोहवाल

दूसरे दिन देवी लक्ष्मी ने मोनू की सारी लकड़ियां सौ सोने के सिक्कों से भरी थैली देकर खरीद ली। सोने के सिक्के पाकर मोनू आसमान में उड़ने लगा।

आज भी काफी गरमी थी, लेकिन मोनू कल वाली गलती नहीं दोहराना चाहता था। वह भागा-भागा घर जा पहुंचा। आज उसकी मां की तबीयत जरा अच्छी थी, इसलिए वह मोनू के लिए हलवा बनाने रसोई में थी।

हलवे की मीठी-मीठी खुशबू जैसी ही मोनू को महसूस हुई, मोनू सोने के सिक्कों से भरी थैली आंगन में बने आले में रखकर रसोई घर की ओर लपका और मां से तत्काल हलवा परोसने को कहने लगा। मां ने तैयार हलवे को तुरंत एक तश्तरी में डाल, गरमा-गरम मोनू के लिए परोसा। मोनू चटखारे लेकर हलवा खा रहा था कि उनकी पड़ोसन एक कटोरी चावल लेने उनके घर में घुसी। घर में घुसते ही अचानक उसकी नजर आले में रखी थैली पर पड़ी तो उसका ईमान डोल गया। चावल लेना छोड़, उसने तुरंत चुपके से पोटली उठाई और दबे पाव वहां से चम्पत हो गई। हलवा खाकर मोनू जैसे ही पोटली लेने आले की तरफ बढ़ा, तो पोटली को वहां न पाकर उसने माथा पीट लिया।

तीसरे दिन भी मोनू को लकड़िया ढोते देखकर देवी लक्ष्मी ने लकड़ी के बदले आज मोनू को हीरे-जवाहरात से जड़ा सोने का अमूल्य हार दिया। मोनू ने सोचा कि ऐसा सुंदर हार उसकी मां की गले में अच्छा लगेगा।

घर पहुंचकर मोनू ने मां को चौंकाने के लिए सोने का हार एक टोकरी के नीचे छिपा दिया और मां को बुलाने छत पर चला गया। एक बंदर यह सब देख रहा था। जैसे ही मोनू मां को बुलाने गया, बंदर ने टोकरी के नीचे से हार उठाया और पलक झपकते ही वहां से नौ दो ग्यारह हो गया। मोनू ने लौटकर जब मां को चौंकाने के लिए टोकरी को उठाया तो वहां से हार गायब देख उसके चेहरे का रंग उड़ गया।

चौथे दिन भी मोनू को लकड़ियों का बोझ ढोते देख लक्ष्मी ने भाग्यदेवता से अपनी हार स्वीकार कर ली।

"मेरी बहन, तुम्हें जो करना था, कर लिया, अब मेरा चमत्कार देखो।" भाग्यदेवता ने मुसकराते हुए देवी लक्ष्मी से कहा। अगले दिन लक्ष्मी अदृश्य रूप से अपने भाई भाग्यदेवता के साथ खड़ी रही। भाग्यदेवता ने मछुआरे के रूप में मोनू की लकड़ियों के बदले में एक रोहू मछली का सौदा किया। क्योंकि मोनू ने बहुत दिनों से मछली नहीं खाई थी, इसलिए वह इस सौदे से भी बहुत खुश हुआ। घर पहुंचकर मोनू ने अपनी मां से कहा कि आज खाने में रोहू का शोरबा और चावल बनाएं। मोनू की मां ने जैसे ही रोहू को काटा तो उसमें से चांदी का सिक्का बाहर निकल आया। यह देख मोनू और उसकी मां बहुत खुश हुए।

इतने में मोनू की मां बोली, "लकड़िया तो सारी मछुआरे को दे आया बेटा, अब चूल्हा किससे जलाऊं? जा, पास के पेड़ की तीन-चार डालियां तोड़ के ले आ।"

पेड़ पर चढ़कर मोनू जैसे ही डालियां काटने लगा कि अचानक उसकी नजर घनी पत्तों से ढकी एक डाली पर लटकते अपने हार पर पड़ी। हुआ यूं कि नटखट बंदर ने कुछ दिन तो उस हार से अपना मन बहलाया और जब मन भर गया तो हार डाली पर झूलता छोड़ चलता बना। हार को पाकर मोनू फूला न समाया और वहीं से जोर-जोर से चिल्लाने लगा, "चोर पकड़ा गया मां! चोर पकड़ा गया मां!"

उसी समय मोनू की पड़ोसन चुराई हुई थैली के सिक्के गिन रही थी। जैसे ही मोनू की आवाज उसके कानों में पड़ी, उसने सोचा कि मोनू ने अपने सिक्कों की थैली पहचान ली है। इस डर के मारे वह थैली लिए घर से भागी और चुपके से उसी आले में रखकर लौट पड़ी।

हार हाथ में लिए मोनू जब झूमता का घर के आंगन में घुसा, तो सामने आले में रखी सोने के सिक्कों से भरी थैली देख उसे अपार हैरानी और प्रसन्नता हुई। इस प्रकार भाग्य की मेहरबानी होते ही मोनू को उसका खोया हुआ धन भी मिल गया।

"यह सच है कि भाग्य जिसके साथ हो, लक्ष्मी की प्राप्ति उसे ही होती है, लेकिन मैं यानी भाग्य भी उसी पर मेहरबान होता हूं जिसने कोई कर्म किया हो। आलसी लोगों पर मैं कभी भी मेहरबान नहीं होता। सच तो यह है कि हम दोनों कर्म करने वाले के पास टिकते हैं।" भाग्यदेवता ने विनम्रता से देवी लक्ष्मी से कहा।

मेहनती मोनू ने भी धन पाकर कभी आलस नहीं किया। अपने कर्मशील स्वभाव के कारण उसने जल्दी ही लकड़ी का एक बड़ा व्यवसाय खड़ा कर लिया। ❁

अपने लेखक को जानिए

शैलेन्द्र सरस्वती : पिछले ढाई दशकों से बाल साहित्य की विविध विधाओं में लेखन तथा प्रकाशन। बाल पत्रिका चहल-पहल तथा दीवार पत्रिका साहित्यिकी का सम्पादन। कुछ बाल नाटकों का निर्देशन। कहानी 'काशी' के लिए बालहंस से पुरस्कृत।

अंडर नाइनटीन क्रिकेट वर्ल्ड कप

भारत बना विश्व चैंपियन

इसमें कोई शक नहीं क्रिकेट आज सबसे लोकप्रिय खेल में से एक है। यह कुछ उन गिने-चुने खेलों में से है, जिसमें खिलाड़ियों को कम उम्र में ही विश्व पटल पर अपना हुनर दिखाने का विश्व कप के द्वारा मौका मिलता है।

कब शुरू हुआ यह सफर

सन 1988 में पहली बार सोचा गया कि जूनियर स्तर पर भी क्रिकेट का विश्व कप कराया जाए। फिर ऑस्ट्रेलिया में अंडर-19 का पहला विश्व कप खेला गया। मेजबान ऑस्ट्रेलिया ने पाकिस्तान को हराकर पहला विश्व कप जीता। परंतु इसके बाद अगला विश्वकप आयोजित होने में 10 साल लग गए। 10 साल बाद साऊथ अफ्रीका में सन 1998 में अगला विश्वकप आयोजित हुआ। इसमें विजेता के रूप में इंग्लैंड की टीम सामने आई जिसने फाइनल में न्यूजीलैंड को हराया।

भारत को विजयी बनाने वाले कप्तान यश ढूल

अगला विश्व कप सन 2000 में श्रीलंका में हुआ। पहली बार दुनिया ने भारत के अंडर 19 खिलाड़ियों के पराक्रम को देखा। फाइनल में मेजबान श्रीलंका को हराकर भारत पहली बार चैंपियन बना। यह वह टूर्नामेंट था जिसमें भारत की तरफ से मोहम्मद कैफ कप्तान थे और युवराज सिंह भी खेले थे, जो बाद में भारतीय सीनियर टीम के अहम सदस्य बने।

उसके बाद भारत को चैंपियन बनने के लिए 8 साल तक इंतजार करना पड़ा और सन 2008 में विराट कोहली के नेतृत्व में भारत ने मलेशिया में आयोजित विश्व कप में साऊथ अफ्रीका को हराया। भारतीय टीम में उस समय खेले खिलाड़ियों में रवींद्र जडेजा, मनीष पांडे और सौरभ तिवारी भी थे, जो बाद में सीनियर टीम के भी सदस्य बने

फिर सन 2012 में ऑस्ट्रेलिया को ऑस्ट्रेलिया में हराकर भारत उनमुक्त चंद के नेतृत्व में चैंपियन बना। इसके बाद भारत 2018 में न्यूजीलैंड में भी चैंपियन बना। भारत 2006, 2016 और 2020 में उपविजेता बना।

इस बार का टूर्नामेंट

14 जनवरी 2022 से 5 फरवरी 2022 तक वेस्ट इंडीज में 14वां अंडर 10 क्रिकेट विश्वकप का आयोजन हुआ। इसमें 16 टीमों के

2022 की चैंपियन टीम

बीच 48 मैच हुए। क्वार्टर फाइनल में एशिया से भारत, पाकिस्तान, बांग्ला देश, श्रीलंका और अफगानिस्तान के साथ इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया और साऊथ अफ्रीका की टीम पहुंची।

क्वार्टर फाइनल में भारत ने बांग्लादेश, ऑस्ट्रेलिया ने पाकिस्तान, इंग्लैंड ने साऊथ अफ्रीका और अफगानिस्तान ने श्रीलंका को हराया।

सेमीफाइनल में कप्तान यश ढूल के शतक के सहारे भारत ने ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड ने अफगानिस्तान को हराकर फाइनल तक का सफर पूरा किया।

फाइनल में तेज गेंदबाजों की शानदार गेंदबाजी के सामने इंग्लैंड की टीम 194 रन बनाकर आउट हो गई। भारत छह विकेट खोकर लक्ष्य हासिल कर चैंपियन बन गया।

भारत का प्रदर्शन

अब तक हुए 14 टूर्नामेंट में भारत पांच बार विजयी रहा है। साथ ही भारतीय टीम तीन बार उपविजेता रही है। इतना शानदार प्रदर्शन और किसी देश की टीम ने नहीं किया है। भारतीय क्रिकेट में बेहद हुए खिलाड़ियों में से वीरेंद्र सहवाग, युवराज सिंह, चेतेश्वर पुजारा, रोहित शर्मा, दिनेश कार्तिक, हरभजन सिंह, सुरेश रैना, विराट कोहली, पृथ्वी शॉ, रवींद्र जडेजा, शिखर धवन, ऋषभ पंत, ईशान किशन आदि इसी जूनियर क्रिकेट वर्ल्ड कप की देन हैं। इसीलिए माना जाता है कि जूनियर स्तर से खिलाड़ियों की देखभाल करने में भारत से बढ़िया कोई और देश नहीं है।

कोविड के इस विषम दौर में भारत की टीम वेस्टइंडीज पहुंची, तो पहले मैच के बाद ही भारतीय टीम के 5 सदस्य कोविड-19 के शिकार हो गए। इनमें नियमित कप्तान ढूल भी थे। परंतु भारतीय टीम की गहराई के कारण टीम पूरे टूर्नामेंट में अजेय रही।

भारत ने सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया जैसी मजबूत टीम को आसानी से हराया और फाइनल में जब इंग्लैंड से सामना हुआ, तो उन्होंने इंग्लैंड की टीम को हमेशा दबाव में रखा। भारत की तरफ से उनके तेज गेंदबाजों ने 9 विकेट निकाले।

इस तरह यश ढूल भारत को विश्व कप दिलाने वाले जूनियर स्तर के पांचवें कप्तान बन गए। उससे पहले मोहम्मद कैफ, विराट कोहली, उन्मुक्त चंद और पृथ्वी शाह विजयी कप्तान रह चुके हैं। ❀

2000 की चैंपियन टीम

2008 की चैंपियन टीम

2012 की चैंपियन टीम

2018 की चैंपियन टीम

भविष्य के सितारे

तुम बच्चों के लिए विशेष रूप से कुछ पेज हमने सुरक्षित किए हैं। तुम जिस रूप में चाहो, अपनी भावनाएं व्यक्त कर सकते हो। उन्हें संजोकर हम यहां देंगे।

आखिर तुम सब में से ही भविष्य के कलाकार, इस दुनिया के सामने आकर भारत का नाम रोशन करेंगे। कभी चित्रकार, तो कभी कहानीकार तो कभी कवि या विचारक बनकर। तो फटाफट रचनाएं भेजो- email : payasmagazine@gmail.com
whatsapp : 7982014609

बाल कोना में छपने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को प्रथम (तीन सौ), द्वितीय (दो सौ) और तृतीय पुरस्कार (एक सौ रुपए) देने का निर्णय लिया है, रेनू मंडल जी ने

सक्षम श्रीवास्तव

नाम : सक्षम श्रीवास्तव
आयु : 13 वर्ष, कक्षा :9,
स्कूल : श्री विनायक सीनियर सेकंडरी स्कूल उरई, उत्तरप्रदेश

शानवी श्रीवास्तव

नाम : शानवी श्रीवास्तव
उम्र : 3
कक्षा : प्लेवे
स्कूल : आर्यन पब्लिक स्कूल, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

नाम : शौमिका श्रीवास्तव
वर्ग : सात, उम्र : 11वर्ष
डस्ट टू क्राउन पब्लिक स्कूल, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

शौमिका श्रीवास्तव

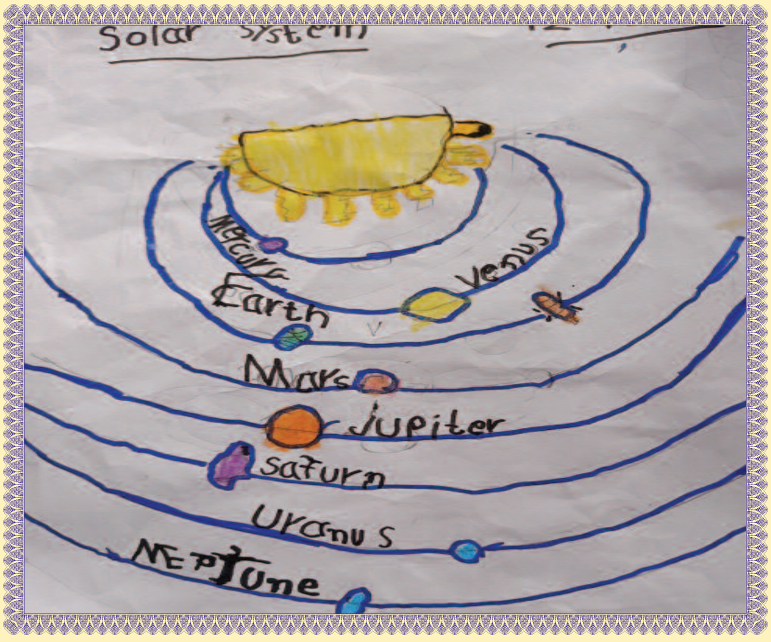

नाम : योगित भाटिया
आयु : 6 वर्ष
कक्षा :यू के जी,
स्कूल : संस्कृति स्कूल, पुणे, महाराष्ट्र

योगित भाटिया

समझने की चाह

नाम : बबीता जोशी
उम्र : 15, कक्षा : 10,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

हमें आपको समझने की चाह तो है
पर कभी समझ न सके।
अब कभी किसी की चाह पूरी हुई है क्या?

हम हिंसा-आहिंसा को जानना तो चाहते हैं
पर कभी जान ना सके।
पर क्या आपसे ज्यादा हम जान सकेंगे उसे?

हम उस दर्द को हटाना तो चाहते हैं
पर कभी हटा न सके।
पर क्या हम अपने पहले कदम से ऐसा कर लेंगे क्या?

हम एक अच्छा नया समाज बनाना तो चाहते हैं
पर क्या बिना किसी के बना पाएंगे।
लेकिन बनाने के इस सफर में कोई हमारे साथ है क्या?

किशोरावस्था

जिंदगी की एक और नई सीढ़ी,
जिससे होकर गुजरती है हर पीढ़ी।
जिस उम्र में लगते हैं,
बड़ो के सब नियम गलत,
और जहां से जाना चाहते है सब पलट।
जिस उम्र में चोट लगने से ज्यादा,
होती है सजने-संवरने की चिंता।
कहते हैं, हम जिसे सुंदरता की आयु,
जहां से मन करता है कि,
अब वापस बचपन में लौट जाऊं।
जिस उम्र में सो जाते हैं हम,
अपने सपनों को याद करते-करते,
जहां मुंह तोड़ जवाब देने लगते है हम डटके।
जिस उम्र में समझते हैं,
हम खुद को ही सही,
जहां बहस कर देते हैं हम,
किसी भी बात पर बेवजह ही।
जहां हर बात पर जिद्द पर अड़ जाना,
और जो चाहिए वो तुरंत ही है लाना।
यही तो है वो उम्र,
जहां हर कोई चाहता है आकर्षण पाना।
और यही है किशोरावस्था में आना।

नाम : हर्षिता भट्ट
उम्र : 15, कक्षा : 9,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

एक चाह

मैं मूक हूं नहीं, पर बनना चाह रही हूं
इस अन्यायी दुनिया में
अकेली न्याय की गुहार लगा रही हूं।
अन्यायियों के बीच यूं फंस गई हूं कि,
अपना अस्तित्व खोती जा रही हूं।
मैं मूक हूं नहीं, पर बनना चाह रही हूं।
इस पैसे कमाने की होड़ में,
सफलता की ओर कदम
बढ़ाना चाह रही हूं।
मैं मूक हूं नहीं, पर बनना चाह रही हूं।
इस अधिकार जमाने वाली दुनिया में,
अपने अधिकार पाना चाह रही हूं।
मैं मूक हूं नहीं, पर बनना चाह रही हूं।
इन सभी अन्यायों के बीच,
न्याय की नई राह बना रही हूं।
मैं मूक हूं नहीं, पर बनना चाह रही हूं।

नाम : आंचल जोशी
उम्र : 14, कक्षा : 10,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

क्यों डरी हुई है वो

नाम : साक्षी भंडारी
उम्र : 14, कक्षा : 10,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

कोई तो जाके उससे बात कर लो,
बोलती नहीं है कुछ
लेकिन कहना बहुत कुछ है चाहती।
खौफ है बेचारी को उन दरिन्दों का
लेकिन बेचारी वो खुद को न मानती।
चाहती तो है करना बहुत कुछ,
लेकिन, अपनी ये बात किसी को बता ना पाती।
न कर पाती है किसी पर भी भरोसा,
जो हुआ है उसके साथ सोचकर ही
कांप उठता है उसके शरीर का रेशा रेशा।
सोच रही है वो कि कहां आ फंसी है वो
कोई नहीं अब उसे अपना है लगता,
यहां तो हर कुछ है बिकता।
सबमें कूट-कूट कर भरी है हैवानियत,
क्योंकि सबने तो बेच खाई है अपनी इंसानियत।
हिम्मत करके मां को अपनी सब कुछ है बताती

सोचती है अब एक मां ही है
जो समझेगी मुझे और करेगी मुझसे प्यार।
सुनते ही मां ने लगा दी उसको फटकार
कि वो हो रही सेक्सुअल हैरेसमेंट का शिकार।
मां ने बोला, बेटा आवाज अपनी हमेशा
अब धीरे ही रखना
क्योंकि ये तेरी है जिम्मेदारी
अपने पापा का मान रखना।
अब बेटी और मां दोनों हैं लाचार
सहना ही पड़ेगा अब उनको ये अत्याचार।
बेटी को बेचनी पड़ी अपनी जुबान
उमर है अभी छोटी लेकिन ये सब किया
क्योंकि खानी थी परिवार को दो पल की रोटी।
एक नहीं, दो नहीं ,
सारे के सारे आज है मौन
तभी कोई नहीं जानता
ये सब सहने वाला है कौन।
क्यों रहना पड़ता है चुप
बस इसलिए...
क्योंकि है रखना परिवार का मान।
कब तक सहेगा तू इंसान
बोल अब और खतम कर दे ये हैवान।
ऐ इंसान
क्यों बिक चुकी है तेरी जुबान ?

गुब्बाराः खेलना या कमाना

सर्दियों का महीना चल रहा है किसी को तो यह सर्दियां बहुत अच्छी लगती हैं, तो किसी को यह महीना बिल्कुल भी पसंद नही।

मैं बताऊं तो खाने पीने के मामले में हम बच्चों का तो सर्दियों में काफी फायदा होता है। बिस्तर में बैठकर गरमा-गरम पकवान खाने का मजा और साथी ही में गरमा-गरम चाय मिल जाए, तो और क्या चाहिए।

एक तरफ हमारी मम्मियों के लिये ठंड में काम करना मुश्किल हो जाता है, चार-चार दिन तक तो कपड़े ही नहीं सूख पाते। इतनी देर में तो और कपड़े हो जाते हैं धोने के लिए। इस वजह से मेरी मम्मी को तो ठंड बिल्कुल भी पसंद नहीं।

एक दिन की बात है। मैं अपनी मम्मी, चाची, भाई और बहन के साथ शाम को गुरुद्वारे जाने के लिए तैयार हुआ। उस दिन सच में बहुत ठंड थी। जितने गरम कपड़े पहनो उतनी ही कम लगे। बहुत ठंडी हवा भी चल रही थी।

हम सभी गुरुद्वारे के लिए निकल गए। हम जब गुरुद्वारा पहुंचे, तो मैंने देखा कि 3-4 छोटे-छोटे बच्चे इतनी ठंड में बिना चप्पल पहने गुब्बारे बेच रहे हैं। मैने उनकी तरफ ज्यादा ध्यान नहीं दिया और गुरुद्वारा चला गया। थोड़ी देर बाद गुरुद्वारे से बाहर आते हुए उन बच्चों में से एक छोटी सी लड़की मेरे पास आई और बोली, “भैया यह गुब्बारा ले लो।”

मेरे पास पैसे तो नहीं थे, इस वजह से मैने कहा, “नहीं मुझे नही चहिए।”

इतनी देर में मेरा छोटा भाई गुब्बारा मांगने लगा, तो मम्मी ने पैसे दिए कि इसे गुब्बारा दिला दो।

मैंने पैसे लिए और उस लड़की को आवाज लगाई।

वह मुसकराई और एक गुब्बारा निकालकर दे दिया।

मैंने उसे पैसे दे दिए। मेरा भाई भी गुब्बारा लेकर खुश हो गया और फिर मैं सभी लोगों के साथ घर लौटा।

घर जाते ही सबसे पहले आग जलाई और हाथ-पैर गरम किए। मैं अभी भी उन्हीं के बारे में सोच रहा था कि कैसे इतनी ठंड में बेचारे बच्चे गुब्बारे बेच रहे हैं।

पर मुझे अच्छा भी लगा कि भीख न मांगकर वह कुछ बेचकर पैसे कमा रहे हैं। जिस उम्र में उन्हें रंग-बिरंगे गुब्बारों से खेलना चाहिए, वहीं बच्चे अभी से यह सब काम कर रहे हैं। हमारे लिए गुब्बारा खेलने की चीज और उनके लिए बेचने की, ऐसा क्यों? क्या उनके मम्मी-पापा काफी नहीं थे कमाने के लिए?

नाम : अमनदीप सिंह
उम्र : 16, कक्षा : 9,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

पर्यावरण को न सताएं

आओ सबको यह समझाएं
पर्यावरण और पेड़ बचाएं।
इमारतें तो खूब बनाएं
पर पर्यावरण को न सताएं।
पेड़ हमारी सांस है
हर जिंदगी हमारे लिए खास है
पेड़ लगाएं पेड़ बचाएं।

नाम : लक्ष्य जायसवाल
उम्र : 14
कक्षा : 9
स्कूल : केंद्रीय विद्यालय, आर्मी एरिया, पुणे, महाराष्ट्र

अपना तिरंगा

हम है हिंदुस्तानी, हिंदुस्तान हमारा है।
हम यहाँ के वासी, सारा जहां हमारा है।

अपना तिरंगा आसमान में लहरायेगा।
देशवाशियों को कर्तव्य का सीख सिखलायेगा।

ये देश हमारा है हम यहाँ के वासी।
गर्व से कहते हैं हम हिन्दुस्तान वासी।

कदम-कदम पर तिरंगा फहरायेंगे।
नाम रोशन हिन्दुस्तान का कर आयेंगे।

वन्दे मातरम, वन्दे मातरम, गायेगा हिन्दुस्तान।
याद दिलायेगा तिरंगा जो वीर हुए कुर्बान।

हिंदुस्तानी चला जाए चाहे लन्दन या जापान।
फिर भी रहता दिल में नाम हिंदुस्तान ।

'केसरी' रंग वीरों की कुर्बानी याद दिलाता है।
रंग 'सफेद' सच्चाई और झूठ का फर्क समझाता है।
'हरा' रंग प्रकृति का संदेश दिखाता है।
तीन रंगों का ये तिरंगा सारे कर्तव्य सिखलाता है।

नाम : सुधांशी पटेल
उम्र : 11
कक्षा :5
स्कूल : केंद्रीय विद्यालय, महासमुन्द, छत्तीसगढ़

मेरे दादू

मेरे दादू है साठ के पार
संग मेरे खेलने को तैयार,
ठुमक ठुमक कर चलते वो
हर पल गाने को तैयार।

मै सुनाती बढ़िया गीत
दादू को आ जाती नींद,
मार-मार खराटे वो
देते हैं मधुर संगीत।

नाम : मन्नत भाटिया
उम्र : 7
कक्षा : 2
स्कूल : संस्कृति स्कूल, पुणे, महाराष्ट्र

पुस्तक परिचय

पुस्तक : महकते फूल, चहकते पंछी
रचनाकार : प्रकाश तातेड़
प्रकाशक : सुभद्रा पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली
मूल्य : 90 रुपए

बाल पत्रिका के संपादन से बाल साहित्य सृजन की ओर अग्रसर प्रकाश तातेड़ की यह नव प्रकाशित पुस्तक है।

बाल साहित्य में विधानुसार साहित्य प्रकाशित होता रहा है लेकिन इस पुस्तक में एक अनूठा प्रयोग हुआ है। इसमें बाल मनोविज्ञान को समझते हुए दो लोकप्रिय विधाओं का इस प्रकार समायोजन किया गया है कि दाएं पृष्ठ पर बाल कविता और बाएं पृष्ठ पहेलियां, बालक सैंडविच की तरह दोनों का आनंद एक साथ ले सकेंगे।

पुस्तक के प्रथम प्रखंड काव्य कुसुम में 'मेरी विनती' से प्रारंभ कर 'पुस्तक', 'आम', 'जामुन', 'पिकनिक', 'परी', 'तितली', आदि विषयों का वर्णन ही नहीं, उससे संबंधित संदेश देने का भी पूरा-पूरा प्रयास हुआ है। इन बाल कविताओं में लय, शिल्प, भाव आदि का समुचित ध्यान रखा गया है जिससे सभी रचनाएं प्रभावशाली बन पड़ी हैं।

इस संकलन की 'भारत की तरुणाई', 'एकता', 'मां के लाल', 'प्रयाण गीत' जैसी कविताओं ने देशभक्ति का संचार किया है। कोरोना महामारी से संबंधित 'पहनो मास्क', 'रोज पढ़ाई हम कर लेंगे', 'बच्चों की पुकार' को भी इस संकलन में स्थान मिला है। इस प्रकार इन बाल कविताओं में रोचकता, विविधता और शैक्षिक उपादेयता प्रचुर मात्रा में है।

पुस्तक का दूसरा खंड पहेलियों से संबंधित है, जिसमें बच्चों के बुद्धि कौशल को विकसित करने की दृष्टि से विविध प्रकार की पहेलियां इस पुस्तक में दी गई हैं। ये पहेलियां हिंदी भाषा के प्रति रुचि बढ़ाने के साथ हिंदी शिक्षण में भी सहायक बनेगी। रिक्त स्थानों की पूर्ति, शब्द पहेली, पहेली कहानी, शब्द माल, शब्द संयोग, उलटा पुलटा आदि शीर्षकों द्वारा रोचक व ज्ञानवर्धक पहेलियों का एक नया संसार इस पुस्तक में देखने को मिलता है।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह नया प्रयोग बाल पाठकों द्वारा पूरी तरह अंगीकार होगा और इस पुस्तक को बाल साहित्य में पर्याप्त लोकप्रियता प्राप्त होगी।

समीक्षा : मधु माहेश्वरी

अपने भीतर के लेखक को उड़ने के लिए खुला आसमान दें

◆ अपनी रचना को दूसरों के सामने लाने के लिए, अपनी कहानी, कविता या लेख को पी.डी एफ. फार्मेट में किताब या पत्रिका के रूप में दुनिया के सामने लाएं।
◆ आप केवल लिखें। बाकी सब हम पर छोड़ दें।
◆ ब्लैक एंड ह्वाइट या रंगीन चित्र भी बनवाने की सुविधा है।
◆ संपादन में 25 वर्षों का अनुभव

संपर्क करें

अनिल जायसवाल
9810556533 7982014609
akjaiswal2592@gmail.com

ANIL JAISWAL

Jais Features

akjaiswal2592@gmail.com
9810556533
7982014609

हिंदी में किसी भी प्रकार की, खास तौर पर बच्चों के लिए प्रकाशन सामग्री या कार्य के लिए संपर्क करें. प्रूफ रीडिंग, संपादन, संकलन, टाइपिंग, मैगजीन सेटिंग, डिजाइनिंग, पी.डी. फार्मेट में पत्रिका या ई. पत्रिका निकालने की सुविधा भी उपलब्ध है.

नंदन बाल पत्रिका में संपादन का 25 वर्षों का अनुभव

पहले क्या करें
चित्र व कल्पना : पंकज रॉय
आग तो जल गई। चलो, पहले हम चावल से शुरू करते हैं।
नहीं, पहले हम इस पर दाल पकाएंगे।
नहीं, पहले सब्जी बनाकर खाते हैं।
नहीं, चलो, सूप बनाकर पीते हैं।
नहीं, पहले हम इस पर हलवा बना लेते हैं।
नहीं, चलो, हम मिलकर खीर बनाते हैं।
पहले ये, पहले ये के चक्कर में आग तो बुझ गई। चलो, फिर से आग जलाते हैं।

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

◆ जो बच्चे अपनी कल्पना के पंख फैलाकर जैसे भी उड़ना चाहेंगे, हम उन्हें पायस में आकाश उपलब्ध करवाएंगे। रचनाकारों के साथ–साथ बच्चों की लिखी कहानी, कविता के साथ अन्य सभी विधाओं को यहां स्थान मिलेगा। आपसे आग्रह है कि अपने आसपास के बच्चों को इसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित करें। इसकी पीडीएफ कापी अपने लोगों में शेयर करें।

◆ यह पत्रिका निशुल्क है। पर जो किसी भी रूप में सहायता करना चाहें, पत्रिका को चलाने के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करना चाहें, उनका स्वागत है।

◆ **रचनाकारों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। अभी यह एकल प्रयास है, अतः टाइप करवाना संभव नही है।

◆ **बाल पाठकों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। जो भी चित्र भेजें, उसे बढ़िया से स्कैन करके भेजें। अगर चित्र साफ नहीं होंगे, तो उनका उपयोग नहीं हो पाएगा। हर रचना या पेंटिंग के साथ अपना क्लोजअप फोटो, उम्र, कक्षा, स्कूल का नाम व मोबाइल नंबर लिखकर भेजना न भूलें।

बातचीत व जानकारी के लिए : whatsapp no : 7982014609
रचना भेजने के लिए : email : **payasmagazine@gmail.com**

◆ आपका सहयोग किसी भी रूप में हो सकता है। बाल पत्रिका को संबल प्रदान करने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं--

✦ संरक्षक बनकर ✦ मासिक अनुदान देकर ✦ यथासंभव एकमुश्त सहायता देकर
✦ विज्ञापन देकर ✦ हर महीने छपने वाले लेखकों या चित्रकारों के भुगतान की जिम्मेदारी उठाकर ✦ किसी और रूप में, जो आपको उचित लगे।

◆ अनुदान के लिए प्रयोग करें--

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA
Anil Kumar Jaiswal
S/A no- 20155811729
Ifsc code SBIN0005943
Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609
PHONEPE : 9810556533
GOOGLE PAY : 9810556533
ANIL JAISWAL

अनिल जायसवाल
9810556533, 7982014609
email : **payasmagazine@gmail.com**